ओ३म्

अलार्म बेल्

अर्थात्

ख़तरे का घंटा

एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान
बनाने के हथकण्डों का विवरण.

आर्य्य-साहित्य-मण्डल, अजमेर
के
खण्डन मण्डन विभाग द्वारा प्रकाशित।

द्वितीय संस्करण
५०००

प्रतिपुस्तक
मूल्य =)

प्रतिपक्ष के षड्यंत्र में * सब को समाहित कीजिये

एक करोड़ हिन्दुओं के बचाने का उपाय करिये

प्रस्तावना

अबतक हिन्दू-जनता में से अधिकांश को यह पता नहीं है कि उनके धर्म को भ्रष्ट करने, नहीं नहीं, उन्हें जड़ मूल से हड़प करने के लिये यवन लोग छुपे २ क्या २ षड्यंत्र रचा करते हैं। जिन २ चालों से उन्होंने ७०० सौ वर्षों में अपनी इतनी वृद्धि करली है, उन्हीं को अब आगे के लिये सुसंगठित करने और अतिशीघ्र एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये हाल में एक प्रसिद्ध कट्टर मौलवी ख्वाजा हसन निजामी दिल्ली निवासी ने १ पुस्तक "दाइये इस्लाम" लिखी है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण बहुत ही गुप्त रीति से मुख्य २ मुसलमानों में बांटा गया था। सुना जाता है कि उस में अपनी धर्मोन्नति के कई साधन ऐसे लिखे गये थे, जिन्हें उन्हीं के धार्मिक लोगों ने बहुत लज्जा तथा आपत्तिजनक बताया और इस कारण अब यह दूसरा संस्करण, जिसे अफ़रीका की मुसलमान प्रबन्धकर्तृ सभा की आग्रह पर छापा गया है, बहुत सी चालों से रहित है, फिर भी हिन्दुओं को भ्रष्ट करने के लिये काफी हैं, हमारे सामने जो प्रति है वह दूसरे संस्करण की है, अतएव जो कुछ इस छोटी सी पुस्तक

में लिखा जावेगा वह सब इसी दूसरे संस्करण के आधार पर लिखा जावेगा। पाठकगण हमारे ख़्वाज़ा हसन निज़ामी साहब के बताये हुये उपायों पर ध्यान दें।

उनके सारे हथकन्डों और दाव घातों को हिन्दू जनता पर प्रगट करने से मेरा यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि वे सब के सब हथकन्डे हमारे हिन्दू भाई भी करने लगें। मेरा यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय यही है कि समस्त हिन्दू जनता उन सब चालों से ख़बरदार होजावे और उनसे अपनी रक्षा कर सके। यदि अब भी हिन्दू जनता ने कुछ ध्यान न दिया तो ख़्वाज़ा साहब को अपनी मनोरथ सिद्धि में कुछ भी विलम्ब न लगेगा और अतिशीघ्र एक करोड़ हिन्दू मुसलमान बन जावेंगे।

हमारे बहुतसे पाठकों ने स्कूल व पाठशालाओं में चक्रवृद्धि ब्याज (सूद दर सूद) निकालना पढ़ा होगा, किन्तु उन्होंने १) रु० का सूद दर सूद १) रु० सैकड़ा सालाना के हिसाब से, एक सौ वर्ष का, जो १ लाख से अधिक होजाता है, निकालने का कभी यत्न न किया होगा, तब फिर उन्हें कैसे अनुभव हो सकता है कि आज जितने मनुष्य मुसलमान होते हैं सौ वर्ष बाद उनकी तादाद क्या होगी? एक करोड़ ख़्वाजा साहब हड़पने की फ़िकर में हैं और हमारे सात करोड़ अछूतों को देश के अन्य

मुल्ला लोग अपने जाल में फँसाने के उपाय सोचरहे हैं। अब पाठकगण सोचें कि उनका क्या कर्तव्य है ? यदि ख्वाजा साहब की बताई हुई समस्त तरकीबों को हमारे पाठकगण कंठस्थ करलें और उनसे सचेत रहने के लिये समस्त हिन्दू जनता को उद्यत करदें तो मैं अपना अहोभाग्य समझता हुआ अपना परिश्रम सफल जानूंगा।

यहां पर एक बात और लिखदेना उचित है कि इस पुस्तक में 'दाइये इस्लाम' का बिलकुल शब्दार्थ नहीं किया गया, कहीं २ केवल आशय ही लेलिया गया है और कहीं उन्हीं के शब्द ज्यों के त्यों लिख दिये हैं जिस में पाठकों को समझने में सरलता हो।

भूमिका समाप्त करने के पूर्व इतना और निवेदन करना आवश्यक है कि ख्वाजा साहब का यह लिखना, कि वे हिन्दू मुसलिम एकता के प्रेमी हैं, और किसी द्वेष से इस पुस्तक को नहीं लिखा, कहांतक ठीक है यह तो पाठकगण स्वयम् जान लेंगे, पर हां, मैं कांग्रेस का सभासद् होता हुआ यह अवश्य बता देना चाहता हूं कि मेरा अभिप्राय इस पुस्तक को हिन्दी में प्रकाशित करने से मुसलमानों के प्रति घृणा उत्पन्न करने का नहीं है, किन्तु ख्वाजा साहब के बताये हुए हथकण्डों से अपने हिन्दू भाइयों को केवल सचेत करने मात्र का है।

—लेखक

धन्यवाद

आर्य्य-साहित्य-मण्डल, जिसको गर्भ ही में बहुत से सज्जनों ने स्वागत किया था, इस पुस्तक की तुच्छ भेंट लेकर जनता के सम्मुख उत्पन्न हुआ। इसके संरक्षकों को यह भ्रम था कि कदाचित् इसकी टूटी फूटी भाषा तथा इसके आकार प्रकार को देख कर जनता कहीं इसे दुरदुरा न दे, किन्तु बड़े हर्ष के साथ लिखना पड़ता है कि उसने इस नवशिशु की तुच्छ भेंट को बड़े प्रेम और उत्साह के साथ अपनाया और प्रथमावृत्ति केवल ३ दिन में हाथों हाथ लेकर दूसरी आवृत्ति की ५००० प्रतियां के छापने के लिये उद्यत् किया। यह दूसरी आवृति अभी प्रेस में ही थी कि इसके ३००० से अधिक के आर्डर आगये। इससे अधिक उत्साहवर्धक बात सञ्चालकों के लिये क्या हो सकती है? ऐसे अवसर पर मण्डल के संचालकों की ओर से मैं बहुत ही विनीत;भाव से जनता को धन्यवाद देता हूं।

प्रबन्धकर्त्ता

आर्य्य साहित्य-मण्डल

अजमेर.

॥ ओ३म् ॥

अलार्म बेल

अर्थात्

ख़तरे का घंटा

समुद्र में जहाज़ तूफ़ान से घिर गया है, थोड़ी ही देर में उसके सारे मुसाफ़िरों में ख़तरे के घण्टे का शब्द सुनकर खलबली मच गई, जिन लोगों ने उस थोड़े से समय का सदुपयोग करके अपने बचाव का प्रबन्ध किया, वे तूफ़ान से बच गये, जो अपने आलस्य, प्रमाद अथवा भय के कारण कुछ न कर सके, आज दुनियां में उनकी हस्ती का पता नहीं है।

आज भारतवर्ष में वही ख़तरे का घण्टा (Alarm Bell) बज रहा है और पुकार २ कर आने वाले ख़तरे की चेतावनी दे रहा है, फिर भी अचेत रहकर यदि कोई सज्जन समय या किसी व्यक्ति विशेष को दोष देते रहे तो यह उनका दोष होगा। इसलिये सावधान हो जाइये, हिन्दूरूपी जहाज़ इस समय चारों ओर से तूफ़ान से घिर गया है। अब समय आलस्य, प्रमाद अथवा भय के कारण व्यर्थ बरबाद करने का नहीं है। ७, ८ सौ वर्षों में आपने अपने करोड़ों लाल दूसरों

को दे दिये । किसी समय आप की सम्पत्ति ३३ करोड़ थी और आप को ३३ कोटि (करोड़) देवता के नाम से पुकारा जाता था, अब आप २२ करोड़ रह गये, इस में से ७ करोड़ अछूतों को आप से जुदा करने और विधर्मी बनाये जाने की जो छुपी २ कार्य्यवाहियां बहुत काल से हो रही हैं, उन्हें इस समय लिखने की आवश्यकता नहीं है, अधिकांश पाठकगण उन्हें जानते ही होंगे । इस समय उस मार-काट और लूट-खसोट का भी ज़िकर नहीं किया जावेगा, जो आये दिन मुसलमानों के लिये एक साधारणसी बात हो गई, जिसकी आग दक्षिण में मलाबार से लगाकर पश्चिम में मुलतान और उत्तर में अमृतसर, सहारनपुर तथा मध्य में अजमेर, आगरा, गोंडा और शाहजहांपुर तक पहुंच गई है, यहां पर उस खतरे का भी उल्लेख नहीं किया जावेगा, जिसके कारण क्षयरोग के रोगी की नाईं हिन्दूजाति दिन प्रतिदिन धीरे २ कम होती जाती है और नित्यप्रति बीसियों हिन्दू विधवायें, बच्चे तथा युवक छुपे २ विधर्मी किये जाते हैं। निस्संदेह उपरोक्त लिखे हुए सब खतरों से भी हिन्दू-जनता को सचेत रहना चाहिये, पर ये सब रोग तो क्षय की नाईं उस पर बहुत पहिले से चिमटे हुए हैं और उसे धीरे २ जर्जरित कर रहे हैं। इस समय जो बहुत भारी खतरा है और जिसका वर्णन इस पुस्तक में किया जावेगा, वह ख्वाजा हसन निज़ामी सा० की किताब "दाइये इस्लाम" है । यद्यपि उसमें बताये हुए हथकन्डों का प्रयोग तो मुसलमान लोग बहुत वर्षों पूर्व से कर रहे हैं, पर अब उन तरकीबों को संगठित रूप से कार्य्य में लाया जा रहा है और उनके द्वारा अतिशीघ्र एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की घोषणा की गई है, इसलिये उन सब तरकीबों

को जानना और उनसे अपने और अपने भाइयों को बचाना प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है। ऐ हिन्दू-जाति के राजे महाराजाओ, सेठो, साहूकारो, वकीलो, बैरिस्टरो, ऑफीसरो, बाबुओ, नवयुवको, विद्यार्थियो और स्त्री पुरुषो! क्या आपमें अपने धर्म के लिये कुछ भी जोश नहीं है? क्या आप अपने धर्म का प्रचार नहीं कर सकते? यदि प्रचार करके अपने धर्म की वृद्धि नहीं कर सकते तो क्या अपनी मौजूदा बची खुची पूंजी की रक्षा भी नहीं कर सकते? यदि कर सकते हैं तो कब और किस की प्रतीक्षा है? यदि अभी तक कुछ निश्चय नहीं किया तो ख्वाजा सा० की बताई हुई सब तरकीबें, जो नीचे लिखी जाती हैं, बड़ी सावधानी के साथ एक एक करके पढ़ जाइये और फिर निश्चय कीजिये कि क्या आप का कर्त्तव्य है।

ख्वाजा साहब ने अपनी किताब 'दाइये इस्लाम' में वे हिकमतों, जिनके द्वारा इस्लामी धर्म का प्रचार किया जा सकता और मुसलमानी मज़हब का प्रलोभन दिया जा सकता है, के वर्णन करने के पूर्व 'इस्लाम धर्म की आवश्यकता' पर जो कुछ उस की प्रशंसा करते हुए लिखा है, वह हमारे पाठकों के लिये अधिक रोचक नहीं है, अतएव उसे छोड़ता हुआ "बिरादरी के बल" पर जो कुछ ख्वाजा सा० ने लिखा है वह नीचे देता हूं।

पाठकगण पुस्तक पढ़ते समय यह ध्यान रक्खें कि ब्रैकेट में जो वाक्य लिखे गये हैं वे लेखक के हैं और मोटे अक्षरों तथा कामा के भीतर बन्द किये हुये ख्वाजा सा० के वे वाक्य हैं जिन पर विशेष विचार करना चाहिये।

——:o:——

बिरादरी का बल

"जो मुसलमान आगरा व मथुरा में मलखानों को आर्य्य बनने से बचाने में लगे हैं या वे मुसलमान जो आगे राजपूतों या दूसरी नौमुसलिम जातियों में काम करना चाहते हैं उन्हें यह बताना आवश्यक है कि हिन्दू जातियों में इस्लाम का प्रचार उनकी बुराई बताने या (मियां साहब को अपनी निर्बलता मालूम होगई) शास्त्रार्थ करने से नहीं हो सकता, इसके लिये दूसरी तदबीरें हैं और उनमें से एक बिरादरी का बल है"।

"पहिले इस्लामी मुल्कों में भी जमाअतों और क़बीलों ने मुसलमानी धर्म नहीं स्वीकार किया था और बड़े २ झगड़े होते थे, किन्तु जब कुरैश ने इस्लाम स्वीकार किया तो हज़ारों आदमी स्वयं आकर मुसलमान बने"।

"यही हाल हिन्दुओं का है चाहे बड़ी जाति के हों चाहे छोटी, यदि उनके प्रतिष्ठित लोग मुसलमान हो जावें तो फिर उन के आधीन सभी हो जावेंगे। इसलिये मलखाना राजपूतों में जो पक्के मुसलमान हैं उनको इस काम में अगुआ करना चाहिये"।

"आर्य्यसमाज को भी सफलता इसी प्रकार हुई है। उन्होंने हिन्दू राजपूत रईसों को मिलाया है और रईस बिरादरी की शान से मलखाने राजपूतों को मुसलमानों के अत्याचारों के मनघढ़न्त क़िस्से सुनाकर कहते हैं कि यदि तुम इस्लाम छोड़ दो तो हम तुम को अपनी बिरादरी में मिलालेंगे और तुम से शादी ब्याह भी करने लगेंगे"।

"इसका उत्तर मुसलमानों को यह देना चाहिये कि लालखानी वग़ैरह मुसलिम राजपूत सरदारों को, जो अलीगढ़, बुलन्दशहर, मथुरा, आगरा, सहारनपुर और मुजफ़्फ़रनगर

वग़ैरह में आबाद हैं और बड़ी २ जागीरों के मालिक हैं और उनमें से कोई २ बहुत पढ़े और जोशीले मुसलमान हैं, बुलावें और उनको मलखानों में लेजावें और ये सरदार केवल इतना कहदें कि यदि तुम इस्लाम में रहोगे तो हम सब तुम से बिरादरी का सा लेनदेन करने लगेंगे, बल्कि मुसलिम राजपूतों के अलावा दूसरी जाति के मुसलमान रईसों को भी बुलाना चाहिये और मलखानों को निश्चय कराना चाहिये, कि इस्लामी बिरादरी बहुत बड़ी है और मलखानों को शादी ब्याह में कोई कठिनता न होगी" (इतने सौ वर्षों क्यों नहीं सुधि ली?)

"मैं जानता हूं कि यह हिकमत आर्य्यसमाज को मालूम है और राजपूत रियासतें भरतपुर व कश्मीर वग़ैरह इनके असर को मान चुकी हैं और दूसरी रियासतें भी इसमें उनको मदद देने को तैयार हैं फिर भी मुझे मुसलमानों की सफलता निश्चय है, क्योंकि मुसलमानों का वादा सच्चा होगा और आर्य्यों के वादे सच्चे और असली न होंगे, कुछ दिन के बाद जब राजपूत देखेंगे कि आर्य्य बनाते समय तो सबने हमारे हाथ का हलुआ खाया था, अब शादी ब्याह में हमारा कोई साथ नहीं देता (सैकड़ों शादी ब्याह होगये और धड़ाधड़ होरहे हैं) तो वे दुबारा इस्लाम की ओर झुक पड़ेंगे, क्योंकि इनके यहां बराबरी का वर्ताव नहीं है और जात पांत के बन्धन बहुत कड़े हैं (ख़्वाजा साहेब आप सोते हैं या जागते? ज़रा हिन्दू बनकर देखिये तो सही कि हिन्दुओं ने कितना सरल तरीक़ा रक्खा है) और मुसलमान इस झगड़े से पाक हैं"।

"मैं जानता हूं कि हिन्दुस्तान में नौमुसलिमों में अब भी नीच ऊंच जात का भेद जारी है, किन्तु यह भेद जल्द उलमा

लोग, मिटा सकते हैं (यानी मलखाने राजपूतों में भी नौ-मुसलिम चमार व भंगियों के साथ शादी ब्याह व लेन देन करने के लिये तय्यार कर सकते हैं), किन्तु हिन्दुओं के भेद को आर्य्यसमाज नहीं मिटा सकता (मिटा दिया) इसको म० गांधीजी भी दूर न कर सके"।

"पस ज़रूरत है और बड़ी ज़रूरत है कि मसले बिरादरी पर इस्लाम की सब सभायें व उलमा अच्छी तरह से विचार करें, व्याख्यानों और शास्त्रार्थ से अधिक इसका प्रभाव न पड़ेगा"। (अब शास्त्रार्थ से घबराते हैं)

"अभी हाल में हिज़ हाइनेस सर आग़ाखां ने अपने लाखों हिन्दू चेलों को मुसलमान बनने को कहा मगर जाति के बन्धन के कारण उनके हुक्म को खुदाई हुक्म मानते हुये भी मुसलमान न बने, यदि मुसलमान लोग उन्हें अपनावें और उनकी शादी ब्याह का वादा करें तो आज बीस लाख आग़ाखानी हिन्दू खुल्लमखुल्ला मुसलमान बन जावें"।

"जमइयतउल उल्मा को एक विशेष सभा करके इस मसले को हल करना चाहिये, यदि वह हल होगया और मुसलमान क़ौम की हैसियत से इस ज़रूरत को समझ गये तो एक करोड़ हिन्दू इस्लाम में मिल जावेंगे"।

"म यह नहीं कहता कि नसल वग़ैरह के ख़याल को बिलकुल उड़ा दिया जावे, न मैं यह चाहता हूं कि डा० गोर की

राय के अनुसार हर क़ौम में मुसलमान शादियां करने लगें, मेरी इच्छा तो केवल इस बात की है कि शरह के हक़ की रक्षा करके असली शान को दृढ़ किया जावे ताकि नौमुसलिमों को ज्ञात हो कि उनकी बिरादरी बहुत बड़ी है और आपस की हमदर्दी हिन्दुओं से इन में अधिक है"।

"शादी करने के लिये तो हर बिरादरी या उसके पास के नसल वाले आपस में समझौता कर सकते हैं, या जमइयत उलमा उनको उचित सलाह दे सकती है, अलबत्ता मेलजोल और शादियों में शामिल होना ज़रूर चाहिये" (कहिये ख़्वाजा सा० अब क्यों बग़लें झांकते हैं ? क्या चमार भंगी मुसलमान होजावें तो आप लोग उनसे शादी ब्याह व लेन देन का वर्त्ताव करेंगे ? यदि नहीं तो फिर विचारों को क्यों धोखा देते और हिन्दुओं को बदनाम करते हैं ?)

"आग़ाखानी व बोहरे आदि बहुत से ऐसे मुसलमान हैं जो मुसलमानों की क़ौम से अलग रहते हैं, यदि उनसे प्रेम करें तो वे भी हमारी ओर आजावेंगे और इससे हमारी ताक़त चौगुनी हो जावेगी"।

"ऐसे मौक़े पर जब कि सर आग़ाखां ने अपने (हिन्दू) चेलों को मुसलमानों की ओर झुकने का हुक्म देदिया है, जमइयत उलमा का फ़र्ज़ है कि वह भी मुसलमानों को इस जमाअत से मेलजोल करने के लिये सलाह दे"।

"सारांश यह कि मुसलमान प्रचारकों को बिरादरी के बल पर ध्यान देना चाहिये जिसमें आर्यसमाज की चढ़ाई का सरलता से रद्द हो सके"।

आशा और भय

"प्रत्येक मज़हब आशा और भय पर निर्भर है, मुसलमान प्रचारकों को भी आशा और भय रखना चाहिये, हिन्दुओं का डर और आशा दुनियां की वस्तुओं पर है, किन्तु मुसलमानों को आशा है तो खुदा से और डर है तो खुदा से। इस भेद को मुसलमान फ़क़ीरों ने जाना है इसी कारण उन्होंने करोड़ों हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया"।

"आर्य्यसमाज के पास आशा या डर नहीं है, उनके यहां अच्छे व्याख्यानदाता और शास्त्रार्थ करने वाले हैं मगर आत्मिक शक्ति वाले कोई नहीं हैं, हां सनातनधर्मियों में हैं मगर उनके साधु किसी को अपने धर्म में शामिल नहीं करते" (इसी कारण तो करोड़ों हिन्दू मुसलमान होगये पर अब वे आपकी चालाकियों से सचेत होरहे हैं)।

"मुसलमानों में लाखों फ़क़ीर हैं उनकी आत्मिक शक्ति की घर २ चर्चा है और अनगणित हिन्दू उनके प्रभाव में हैं। आर्य्य या ईसाई चाहे जितनी कोशिश करें हिन्दू लोगों के दिलों से आशा और डर दूर नहीं हो सकता। इस बात को नई रोशनी के लोग भी दूर नहीं कर सकते। हज़ारों पढ़ेलिखे हिन्दू व मुसलमान फ़क़ीरों की आत्मिक शक्ति के क़ायल हैं। एक आदमी के औलाद नहीं होती हर प्रकार के इलाज करके वह थक जाता है, अन्त में किसी मुसलमान फ़क़ीर की दुआ या जंत्र से लड़का होजाता है, तो फिर चाहे जितना आर्य्य-समाजी या ईसाई उसे मना करे, वह कभी नहीं मानेगा, क्योंकि उसको निश्चय हो जावेगा कि यदि मैं उस फ़क़ीर की बात न मानूंगा तो मेरा लड़का मर जावेगा"।

"एक बीमार सब इलाज करके थक जाता है, कुछ लाभ नहीं होता, फिर किसी मुसलमान फ़क़ीर के पास जाता है और अच्छा होजाता है। भला फिर कैसे उसका उस पर विश्वास न हो, वह डरेगा कि (मुसलमान होने से) इन्कार करने से दुबारा बीमार हो जाऊंगा"।

(निश्चय इस प्रकार के जाल रचकर बहुत से मुसलमान फ़क़ीर हिन्दुओं को ठगा करते हैं और हज़ारों हिन्दुओं को अपने जाल में फंसा लेते हैं, किन्तु शीघ्र ही उनका भांडा फूट जाता है और दोनों अपने २ किये का फल भोगते हैं, यदि मैं उन सब किस्सों को लिखूं, जहां मुसलमान फ़क़ीरों ने इस प्रकार के जाल फैलाये, और हज़ारों रुपया लूट खसोट कर चलते बने, सैकड़ों हिन्दुओं ने अपना धर्म भ्रष्ट किया, रुपये खोये तब उन्हें पता लगा कि ठीक बात क्या है, तो बड़ी पोथी बन जावे। अतएव बहुतसे क़िस्से न लिखकर एक ही लिखता हूं—ज़ि० रायबरेली के एक ग्राम में एक मियां साहब बैठ गये और यह मशहूर किया कि केवल उनके हाथ का पानी पीने से सब बीमारियां दूर होजाती हैं और आदमी मुंह मांगी मुरादें पाते हैं। भीड़ लगने लगी, थोड़े ही दिनों में हज़ारों का जमघट होने लगा, रात दिन एक मेला सा लगा रहता, बड़े २ पंडित, तिलकधारी आते और उनके हाथ का पानी पीते, हज़ारों रुपये चढ़े, सब कुछ हिन्दुओं ने खोया, कई मास बाद उन फ़क़ीरमियां की असलियत खुली, उनके असली नाम का पता लगा, कई साल से उनके नाम वारन्ट था, अतएव वह गिरफ़्तार किये गये। समाचारपत्र पढ़ने वाले इस प्रकार के एक नहीं सैकड़ों क़िस्से पढ़ चुके होंगे और अब भी कभी २ पढ़ते ही होंगे)

"गरज़ और सैकड़ों काम दुनियां में हैं जिनकी आशा से हिन्दू लोग मुसलमान फ़क़ीरों के पास जाते हैं बड़ी श्रद्धा रखते हैं और उनकी बद्दुआ से सदा डरते रहते हैं"।

"कोई माने या न माने यह शक्ति केवल फ़क़ीरों में ही होती है और यह आर्य्यसमाज या ईसाई मिशन के लोगों में नहीं होती"।

"इसलिये आगे चलकर मैं उन हिकमतों व तरक़ीबों को बयान करूंगा जो आशा और भय के आधीन हैं और यदि उन्हें नियमित रूप से काम में लाया जावे तो करोड़ों आदमी मुसलमान हो सकते हैं। कुछ वर्षों से मुसलमान फ़क़ीरों ने मुसलमान बनाने का काम छोड़दिया है"।

(पाठकगण ! उपरोक्त कामों के भीतर बन्द ख्वाजा सा० के वाक्यों को ध्यान पूर्वक पढ़िये, किस प्रकार से आशा का प्रलोभन और भय दिखा कर ख्वाजा सा० अपना मतलब पूरा करना चाहते हैं)

"अब मैं उन सब तरक़ीबों की सूची नीचे देता हूं"।

धर्म की वे हिकमतें जिनके द्वारा इस्लामी प्रचार किया जा सकता है

१—ताज़िये और मोहर्रम की रसमें।

२—हज़रत अली और हज़रत इमाम हुसेन की शोहरत।

३—हज़रत बड़े पीर की ग्यारहवीं और उनकी करामातें।

४—जीवित पीरों की करामातें और दुआओं के तासीर की शोहरत।

५—जीवित पीरों की दुआ से बे-औलादों के औलाद होना या बच्चों का जीवित रहना या बीमारियों का दूर होना या दौलत की वृद्धि या मन की मुरादों का पूरा होना।

६—बद्दुआओं (शाप) का भय।

७—अपने मनोरथ में तबाही का डर।

८—वबा, अकाल या और किसी दैवी आपत्ति आने का भय।

९—अज़ान का अभिप्राय बताना और जगह २ उसका रिवाज देना।

१०—गिरोह के साथ नमाज़ पढ़ने का रिवाज देना और उसकी अच्छाई का प्रचार करना।

११-गिरोह के साथ नमाज़ ऐसी जगह पढ़ना जहां उनको दूसरे धर्म के लोग भली प्रकार से देख सकें।

१२—मुसलमानों में जो बराबरी का वर्ताव कार्य्यरूप में जारी है उसकी अच्छाइयां को बताना।

१३—खाने, नमाज़ पढ़ने और शादी विवाहों में मुसलमानों के छोटे बड़े सब आदमियों में बराबरी का वर्ताव होना और नीची जातियों को बताना कि ईसाइयों और आर्य्यों में यह खूबी नहीं है।

१४—फ़ाल, रमल (शगुन), नजूम (फलित ज्योतिष्) व जफ़र के द्वारा।

१५—हिन्दू और मुसलमान फ़कीरों के वाक्यों को गांवों में गाना और उन गानों का घर २ रिवाज देना।

१६—ऐसी मुसलमानी खबरों को फैलाना जिनसे नीची जाति के हिन्दू लोगों को अचम्भा हो और हर जगह उनकी चर्चा होने लगे।

१७—मजजूबों (पागलों) की बड़।

१८—गाँवों और क़सबों में ऐसे जलूस निकालना जिनसे हिन्दू लोगों में उनका प्रभाव पड़े और फिर उस प्रभाव द्वारा मुसलमान बनाने का कार्य्य किया जावे।

१६—नीच जाति के हिन्दू लोगों के बीमारों का बड़े प्रेम के साथ इलाज करना और उन्हें बराबरी का दर्जा देकर उनका हमदर्द होना।

२०—चमार या भंगी यदि मुसलमान बनें तो उनके साथ बड़े २ मुसलमानों को लेकर बड़े मजमों में खाना खाना व गले मिलना और पास बिठाना।

२१—समाचारपत्रों में नीच जाति के हिन्दुओं की मदद करना, जिन्हें बड़ी जाति के हिन्दू घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

२२—गाने वालों को ऐसे २ गाने याद कराना और ऐसे २ नये २ गाने तय्यार करना जिनसे मुसलमानों में बराबरी के वर्ताव की बातें व मुसलमानों की करामातें प्रगट हों और उच्च जाति के हिन्दुओं के बुरे व्यवहारों का भी ज़िकर होवे जो वे नीच जातियों के साथ करते हैं और जिनसे नीच जाति के लोगों को दुःख होता है और उनकी बेइज़्ज़ती होती है।

२३—मुसलमान फ़क़ीरों को ऐसे छोटे २ वाक्य याद कराये जावें, जिन्हें वे हिन्दुओं के यहां भीख मांगते समय बोलें

और जिनके सुनने से हिन्दुओं पर इस्लाम की अच्छाइयां और हिन्दुओं की बुराइयां प्रगट हों।

२४—हिन्दुओं की शादी ग़मी में प्रेम के साथ सम्मिलित होना और विशेष कर नीच जाति के हिन्दुओं से मेलजोल और बराबरी का वर्ताव करना।

२५—चमार, भङ्गी और सब नीच जाति के हिन्दू लोगों की मज़हबी बातों को जानने की कोशिश करना और मुसलमान प्रचारकों को उन्हें छोटी २ किताबों द्वारा बताना।

२६—हिन्दू या नौ-मुसलिम लोगों के सामने अपने आपस के झगड़ों को छुपाना और आपस के मतभेद की बातों को प्रगट न होने देना।

२७—अंग्रेज़ों के मुल्की प्रबन्ध से शिक्षा ग्रहण करना यानी जिस प्रकार वे मुल्कों पर क़ब्जा करते हैं, उन्हें ध्यान-पूर्वक देखकर इस्लाम धर्म के प्रचार में उन्हें वर्तना।

२८—ईसाई मिशन की प्रत्येक बातों पर ध्यान देना और उनकी प्रत्येक बात से खबरदार रहना और उनकी जिन २ बातों से अपने प्रचार में मदद मिले, उन्हें अपने यहां जारी करना।

२९—आर्य्यसमाज के प्रत्येक गुप्त व प्रगट आन्दोलन से खबरदार रहने के लिये रात दिन प्रयत्न करना और उनकी कोई बात अपने यहां लेने के योग्य हो तो उसे अपने प्रचार में सम्मिलित करना।

३०—दूसरे धर्म व उनके धार्मिक नेताओं को बुरा न कह-

ना और कितना ही जोश क्यों न दिलाया जावे पर सदा ज़ब्त से काम लेना।

३१—शास्त्रार्थ केवल उसी दशा में करना जब बिना किये काम न चलता हो, जहां तक सम्भव हो शास्त्रार्थ की बात को टाल देना और अपना काम चुपचाप करना।

३२-समाचारपत्रों में मुसलमान बनाने के तरीक़ों और अपनी सफलता के समाचारों को कभी न छपाना और यदि आवश्यकता पड़े तो ऐसे ढंग से छपाना जिनसे इस्लामी हिकमतों और तदबीरों का भांडाफोड़ जनता में न हो।

३३-इस्लामी धर्म-प्रचारकों को मान, प्रतिष्ठा रहित होना चाहिये और प्रचार में कोई धोखे का काम न करना चाहिये।

३४-जहांतक हो ऐसी बातें सोचना जिनमें धन कम व्यय हो और प्रचारक लालच में न फंस जावें।

३५-आग़ाख़ानी मिशन की हिकमतों को मुस्लिम प्रचारकों को बताना और यदि आवश्यकता हो तो बिना किसी तास्सुब के उनको अपने कामों में शामिल करना।

३६-क़ादियानी ढंगों से लाभ उठाना और उन्हें भी अपने कामों मे ज़रूरत पड़ने पर सम्मिलित करना।

३७-मुसलमानों के अन्दर जितने भी फ़िरक़े हैं उन सब को बिना किसी तास्सुब के इस्लामी धर्म प्रचार में सम्मिलित करना और एक केन्द्र बनाकर प्रचार के कामों में उस केन्द्र के प्रबन्धकों की आज्ञा-पालन करना।

३८-समस्त इस्लामी प्रचारकों को इस्लाम की शरह का पाबन्द रहना।

३९-अपने प्रयत्नों और हिकमतों को खुदा की मदद पर छोड़ना और हर समय अपनी सफलता पर विश्वास करना, किसी कष्ट से न घबराना, और अन्त में उनका बदला मिलेगा, इस पर विश्वास करके सारी कठिनाइयों को झेलना, यदि इस्लामी धर्म-प्रचार में कोई ऐसी हिकमत करना पड़े जो सच्ची न हो और उस में अपना कोई स्वार्थ हो तो उसे छोड़ देना और खुदा से माफ़ी मांगना। (इससे सिद्ध होता है कि अपना स्वार्थ न हो तो झूठी हिकमतें भी करना चाहिये)।

४०-इस्लामी धर्म-प्रचार के लिये समाचारों को इकट्ठे करने और उन्हें सब जगह पहुंचाने के लिये एक विभाग नियत करना।

जासूस विभाग

२-इस्लामी धर्म का समाचार-विभाग और उसके कर्त्तव्य का विवरण

१—ईसाइयों के जितने और जहां २ मिशन हैं उन के पूरे विवरण महकमे आला मे रहने चाहियें।

२—आर्य्यों की जितनी और जहां २ समाजें हैं उन की भी पूरी तफ़सील महकमे आला में रहनी चाहिये।

३—मुसलमानों के इतर और जितनी धार्मिक संस्थायें हैं उन सब के समाचार और विवरण उसी महकमे आला में होने चाहियें।

४—ईसाई, आर्य्य और अन्य धर्मावलम्बियों के प्रचार के सारे साधनों को जानना चाहिये और उनकी सूची उपरोक्त दफ़्तर में रखनी चाहिये।

५—किसी प्रान्त, शहर, क़सबा, अथवा ग्राम में कोई ऐसी बात हो जिससे इस्लाम को हानि पहुंचे तो उस जगह के जासूसों को अपने प्रान्त के जासूसों के आफ़ीसर के पास खत भेजना चाहिये और उस महकमे आला को शीघ्र सूचना देना चाहिये।

६—यह विभाग तार तथा चिट्ठियों के लिये छुपे हुये संकेत नियत करे और उन्हीं संकेतों द्वारा समाचार भेजे और मंगाये जाया करें। किन्तु यह काम की उन्नति पर होना चाहिये आरम्भ में नहीं।

७—किसी ग़ैरमुस्लिम या नौमुस्लिम जाति में ईसाई या आर्य्यों का कोई प्रचारक जावे और वहां इस प्रकार का कोई कार्य्य आरम्भ करे तो अतिशीघ्र उस जगह के जासूस को अपने महकमे में सूचना देनी चाहिये।

८—किसी जगह रक्षा या प्रचार की आवश्यकता हो तो खुफिया लेखक को सूचित करना चाहिये।

९—जहां रक्षा या प्रचार का काम करना हो वहां जासूस विभाग को अपने आदमी नियत करने चाहियें, जो वहां के रहने वालों के विचार, रसम और रिवाज से जानकारी रखते हों।

१०—प्रयत्न करना चाहिये कि मुसलमान बिना कुछ लिये यह सब काम करें और यदि खर्च की कहीं आवश्यकता पड़े तो बहुत थोड़ा व्यय करना चाहिये। अंग्रेज़ी जासूस विभाग की तरह अंधाधुन्ध व्यय न किया जावे।

११—अंग्रेज़ी खुफ़िया पुलिस और साधारण पुलिस वालों से छुपे छुपे यह तय करलेना चाहिये कि इस्लाम धर्म के विरोध में हिन्दुओं की सब बातों और उपायों को वे अपने महकमे को बता दिया करें या अपने जासूस उनके पास जाकर सब भेद लेलिया करें।

१२—खुफ़िया और साधारण पुलिस के समस्त मुसलमान अहलकारों को चाहिये कि यदि हमारे महकमे के जासूसों को भेद देना मुनासिब न समझें तो सीधे हमारे समाचार विभाग के आलादफ़्तर को सारी खबरें भेजा दिया करें और परलोक का फल प्राप्त करें।

(सरकार को उपरोक्त दोनों पैरों पर विशेष ध्यान देना चाहिये)

१३—मुसलिम प्रचारकों के चाल चलन की भी पूरी निगरानी रखनी चाहिये, जासूस हर समय इसका ध्यान रक्खें, किन्तु अपनी निजू अदावत के कारण किसी को बदनाम न करें नहीं तो खुदा के सामने उन्हें जवाब देना होगा और महकमे आला के सामने भी उस खबर के सच्च न होने पर लज्जा उठानी पड़ेगी।

१४—ईसाइयों व आर्य्यों के केन्द्रों या उनके लीडरों के यहां से उनके खान्सामाओं, बहरों, कहारों, चिट्ठीरसाओं, कम्पाउन्डरों, भीख मांगनेवाले फ़क़ीरों, झाड़ू देने वाली स्त्री या पुरुषों, धोबियों, नाइयों, मज़दूरों, राजों

(सिलावटों) और ख़िद्मतगारों आदि के द्वारा ख़बरें और भेद प्राप्त करना चाहिये।

(हिन्दुओं को एक एक शब्द नोट करलेना चाहिये और बचने का उपाय करना चाहिये)।

१५—उनके यहां के नये २ भेदों और कामों की जानकारी की आवश्यकता है, ऐसी बातें, जिनका ज्ञान विना उस प्रयत्न के हो सकता है, जानने की आवश्यकता नहीं है।

१६—जो लोग यह ख़बरें लावें उन्हें परलोक के फल का प्रलोभन दिया जावे और यदि आवश्यकता पड़े और ख़बर लाने वाला मांगे तो उस ख़बर की महत्ता देखकर थोड़ा बहुत धन भी दिया जावे।

१७—इलाक़ों के महकमे में केवल उन्हीं मुसलमान अफ़सरों को नियत किया जावे, जिन्हें अंग्रेज़ी महकमे की, खुफ़िया पुलिस का तजुरबा हो और दिल में इस्लाम का दर्द भी रखने हों या जिनकी योग्यता अच्छी हो और ईमानदार भी हों।

१८—घूमनेवाले, फ़क़ीर, रम्माल, नजूमी (फालित् ज्योतिष् बताने वाले), पागल फ़क़ीर, तावीज़ (जन्त्र) देने वाले, अमल करनेवाले, पटवारी, अन्धे, भीख मांगनेवाले, बने हुये ग़रीब भिखमंगे, भीख मांगनेवाले स्त्री आदि जो घरों में जा सकें, तरकारी बेचनेवाली स्त्री पुरुष और हिन्दुओं के यहां के नौकरों से भी ख़बरें पहुंचाने का काम लेना चाहिये। (पाठक ! इन बातों को नोट करिये)

१९—इस बात का पूरा २ ध्यान रखना चाहिये कि खबरें देनेवालों से किस प्रकार की खबरें मंगाई जावें और उनसे ऐसे ढंग से बात की जावे जिससे उन्हें कष्ट न हो और वे अपना भेद दूसरों पर प्रकट न कर सकें, अतएव उनकी समझ और अक़ल को पहिले परख लेना चाहिये।

तात्पर्य यह कि खबरों के मंगाने और पहुंचाने का काम बहुत छुपे हुये और होशियारी से लेना इस्लामी धर्म के प्रचार के लिये अत्यन्त आवश्यक है, किन्तु जितना आवश्यक है उतना ही कठिन भी है, इस कारण यह काम केवल तजुर्बेकार आफ़िसरों के ही द्वारा कराना चाहिये।

नोट—उपरोक्त बताये हुये साधनों पर कुछ टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं, पाठकगण भली प्रकार समझ सकते हैं कि किस प्रकर उनकी रक्षा हो सकती है। कोई भी हिन्दू ऐसा न होगा कि जिसको दफ़ा १४ व १८ में बताये हुये आदमियों से काम न पड़ता हो, इन्हीं लोगों से नहीं वरन् मुसलमान चूड़ीवालों, बिसाती, रंगरेज़ तथा फेरी वालों से भी रात दिन काम पड़ता है, करोड़ों हिन्दुओं के यहां मुसलमान चपड़ासी, चौकीदार, कोचवान, सिपाही तथा क्लर्क आदि का काम करते हैं, इन सब के जासूसी और भेदों का काम करने पर हिन्दू लोग अपनी रक्षा का क्या उपाय कर सकते हैं (उन्हें बहुत सोच विचार कर कुछ न कुछ निश्चय करना चाहिये)

३—प्रत्येक मुसलमान को प्रचारक बनना चाहिये

यह बड़ी भूल है कि केवल आलिम और बुजुर्ग लोगों पर ही इस्लाम के प्रचार का भार रक्खा गया है, इस्लाम ने

प्रत्येक मुसलमान पर प्रचार का कार्य्य करना आवश्यक ठहराया है, किन्तु बहुत से मुसलमान अपने बल को समझते ही नहीं, अतएव उन्हें यह बताना ज़रूरी है कि वे मुसलमान बनाने में क्या क्या काम कर सकते हैं।

नीचे एक सूची दी जाती है जिसके द्वारा प्रत्येक मुसलमान अपना अपना काम निर्धारित कर सकता है। यदि उसके अनुसार प्रत्येक गिरोह में प्रचार का कार्य्य आरम्भ कर दिया गया और प्रत्येक मुसलमान ने उत्साह और सत्यता से काम किया, तो थोड़े ही समय में अनगणित नये आदमी मुसलमान होजावेंगे।

४-लड़ाई के दो रुख़ होते हैं

मज़हबी प्रचार ज़बान और अमल की एक लड़ाई है, लड़ाई में सदा जीत ही नहीं होती कभी हार भी होती है। अतएव मुसलमानों को यदि कभी असफलता भी हो तो निराश न होना चाहिये, क्योंकि प्रयत्न और परिश्रम करनेवालों से ख़ुदा ने वादा किया है, कि अन्त में जीत उन्हीं की होगी।

५-सूची मुसलमान गिरोहों की जिन्हें काम करना चाहिये

१—मशायख़ (बुज़ुर्ग लोग), २—उलॅमा (पण्डित), ३—वालियान रियासत (मुसलमान नवाब वग़ैरह), ४—काश्तकार (किसान), ५—दस्तकार (कारीगर लोग), ६—तज्जार (दुकानदार लोग), ७—मुलाज़िम पेशा लोग, ८—राजनैतिक लीडर, सम्पादक, कवि और पुस्तकें लिखने वाले लोग, ९—डाक्टर व हकीम, १०—गानेवाले, ११—भीख मांगनेवाले, १२—ख़बर लाने और लेजाने वाले।

उपरोक्त १२ गिरोहों को निम्नप्रकार से बांटा गया है—

१–मशायख़

१—सज्जादा नशीन–ये वे लोग हैं जो किसी दरगाह के या किसी बड़े बुज़ुर्ग के वारिस या ख़िलाफ़त के तौर पर अधिकारी हों, उनमें से कोई २ चेला भी बनाते और धर्म-उपदेश भी करते हैं और कोई २ केवल जागीरदार होते हैं या शिष्यों की नज़र नियाज़ पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं और धर्म-उपदेश नहीं करते।

ये सब लोग मुसलमान बनाने का काम कर सकते हैं, यदि वे मुरीद बनाते और उपदेश देते हैं तब अपने बुज़ुर्गों के रिवाज के अनुसार मुसलमान बनाने का काम आरम्भ करदें और स्वयं या अपने आधीन लोगों के द्वारा मुरीदों के इलाक़ों में, जहां हिन्दू या नौमुसलिम हों, उन्हें मुसलमान बनाने और नौमुसलिमों को समझाने का उचित प्रबन्ध करें और प्रत्येक मुरीद (चेला) को हुक्म दें कि वे नीचे लिखे हुये कामों में से कोई न कोई काम अपने ज़िम्मे लें। जिनके यहां मुरीद वग़ैरह बनाने या उपदेश देने का काम नहीं होता, उनको चाहिये रुपये से मदद दें और अपने आधीन लोगों से मुसलमान बनाने का काम लें या स्वयं नीचे लिखे किसी काम को अपने हाथ में लें।

२—मुरीद करने वाले फ़क़ीर—ये किसी दरगाह आदि के सज्जादा नशीन नहीं होते, किन्तु इन्हें मुरीद करने की आज्ञा होती है, उनको भी चाहिये कि अपने पीर की आज्ञानुसार मुसलमान बनाने का काम करें, अनपढ़

मुसलमानों को रोज़ा नमाज़ और इस्लामी अक़ीदों का उपदेश दें और यह भी प्रयत्न करें कि हिन्दुओं में उनकी मुरीदी का असर पड़े, इसके लिये वे मुझ से पत्रव्यवहार कर सकते हैं।

३—नियाज़ व मौलूद शरीफ़ करने वाले—ये लोग वे हैं जो मुरीद नहीं करते पर उर्स करते हैं। ग्यारहवीं और मौलूद की महफ़िलें उनके यहां होती हैं, उनको चाहिये कि मजलिसों में हिन्दुओं को भी बुलावें ताकि बुज़ुर्गों का रूहानी असर उनको इस्लाम की ओर झुकावे।

४—तावीज़ (जन्त्र) व गन्डे देने वाले—इनमें से कोई मुरीद भी करते हैं और कोई मुरीद नहीं करते, इनको चाहिये कि जब कोई हिन्दू इनके पास आवे तो उसको इस्लाम की खूबियां बतावें और मुसलमान होने का लालच दें और अनपढ़ मुसलमानों को इस्लाम की आवश्यक बातें समझावें।

५—घूमने वाले फ़क़ीर—ये बहुत बड़ा काम कर सकते हैं, इनको देहातों में जाने का अवसर प्राप्त होता है, इनका कर्तव्य होना चाहिये कि देहात की नीच हिन्दू जातियों को मुसलमानों की खूबियां बतावें और औलिया लोगों की करामातों के क़िस्से भी सुनावें।

पढ़े लिखे मुसलमानों का कर्तव्य है कि जब कभी उनको कोई घूमनेवाला फ़क़ीर मिले तो यह मेरा (ख़्वाजा साहब का) सन्देशा सुना दें।

६—रमल, नजूम व जफ़र का काम करने वाले—इनको मशायख़ के गिरोह में इस कारण रक्खा गया है कि एक ग़ैबी काम का इनसे संबन्ध है, ये भी मुसलमान बनाने का काम बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं, उनको चाहिये कि जब अपने सवाल करने वालों से बातचीत करें तो मौक़ा देखकर इस्लाम की भी कोई बात सुनादें और यदि सम्भव हो तो अपने रमल व नजूम के जवाबों को इस ढंग से कहें कि जिससे सवाल करने वालों पर इस्लाम का असर पड़े।

७—मजज़ूब (कुछ २ पागल)–इनकी बात का बहुत प्रभाव पड़ता है, मुसलमान पाठकों को चाहिये कि जब कोई मजज़ूब मिले तो उसको मुसलमान बनाने की ज़रूरत बतावें जिसमें उसका ध्यान इस ओर जम जावे और यह अपनी बातों से कुछ काम कर सके।

२–उलमा।

१—फ़तवा देने वाले सुन्नी व शियॉ आलिम लोग–इनका काम रक्षा व संशोधन करने का है, इनके पास जब कोई फ़तवा मांगने आवे तो एक दो बात दीन के संबन्ध की अपनी ओर से अलग काग़ज़ पर लिख दिया करें या ज़बानी उसको सुना दिया करें।

२—पढ़ाने वाले सुन्नी व शिया—इनका काम अपने शिष्यों को रोज़ मुसलमान बनाने के लिये उत्साहित करने का है और यदि कोई हिकमत उन्हें सूझ पड़े तो वह भी बता दिया करें।

३—व्याख्यानदाता-इन्हें चाहिये कि हर जगह मुसलमान बनाने के संबन्ध में उत्साहवर्धक उत्तेजना लोगों में उत्पन्न करें, अनपढ़ मुसलमानों को मुसलमानी अक़ीदे सुनायें और आपुस के मतभेद की बातों का वहां ज़िकर न करें।

४—शास्त्रार्थ करने वाले आलिम-हिन्दुओं और ईसाइयों के मसलों को इन्हें अच्छी तरह से जानना चाहिये और एक २ मसले में एक २ आलिम को इस प्रकार से तय्यार होना चाहिये कि फिर उनका कोई मुक़ाबिला न कर सके यानी १-ईसाइयों के बाप, बेटा और रुहूल क़ुदुस पर पूरी तय्यारी करे, १-मसीह के संबन्ध में तैयार हो, उनकी मज़हबी बुराइयों के बयान करने में निपुण हो, १-आर्य्यसमाज के ईश्वर, जीव व प्रकृति के मसले पर खूब तय्यारी करे, १-आवागमन पर काफी मसाला इकट्ठा करे, १-नियोग को ले ले इत्यादि २ और जिस प्रकार से आंख व कान आदि के अलग २ डाक्टर होते हैं उसी प्रकार शास्त्रार्थ करने वालों को भी अलग २ एक एक विषय में तय्यारी करनी चाहिये।

५—मसजिदों के इमाम-इनको हर नमाज़ के बाद साधारणतया और जुमाँ की नमाज़ के पश्चात् विशेषतया सब लोगों को मुसलमान बनाने और मुसलमानों की इसलाह (संशोधन) की सरल रीतियां बताना चाहिये।

६—क़ाज़ी--इनको ब्याह के समय सब इकट्ठे हुए लोगों को यह बताना चाहिये कि किन २ औरतों से ब्याह करना हलाल और किन २ से हराम है और स्त्री पुरुष के एक दूसरे पर क्या २ हक़ हैं। अनपढ़ क़ाज़ियों

को आवश्यक मसले जानना चाहिये और "दाइये इस्लाम" के पाठकों को चाहिये कि अनपढ़ क़ाज़ियों को आवश्यक मसलों के सीखने के लिये विवश करें।

७—देहाती मदरसों के अध्यापक—ये बहुत अच्छा काम कर सकते हैं (क्योंकि इन मदरसों में हिन्दू बच्चे भी पढ़ते हैं) इनके पास अपने धर्म-प्रचार और धर्म-वृद्धि (यानी मुसलमान बनाने) के पर्याप्त साधन हैं। इनको चाहिये कि महक्मे आला से पुस्तकें मंगाकर लड़कों और उनके माता पिताओं को सुनायें और गांव में जो हिन्दू लोग हों और विशेषकर नीच जाति के हिन्दुओं को इस्लाम की खूबियां बताया करें और मुसलमान होने के लिये प्रोत्साहित करें।

८—दीनी इल्म पढ़नेवाले विद्यार्थी—इनको अपना कुछ समय बचाकर उसे पास के मोहल्लों में इस्लाम की खूबियां बताने और मुसलमान बनाने में ख़र्च करना चाहिये।

९—अंग्रेज़ी पढ़ने वाले विद्यार्थी—इन्हें भी कुछ समय बचाकर धर्म-प्रचार में ख़र्च करना चाहिये और मुसलमान बनने के लिये लोगों को तय्यार करना चाहिये, खबरें लाने और ले जाने का काम भी इन्हें करना चाहिये।

१०—व्याख्यान देने या पढ़ाने वाली स्त्रियां—इनको मुसलमानी मसले स्त्रियों में बताना चाहिये, इससे ही उन्हें मुसलमान बनाने का सवाब (फल) मिलेगा।

३-बालियान रियासत ।

भारतवर्ष में लगभग एक सहस्र वर्ष मुसलमानों ने राज्य किया, किन्तु फिर भी हिन्दुओं के मुक़ाबले में मुसलमानी रियासतें बहुत कम हैं, इससे यह स्पष्ट है कि मुसलमान बादशाहों ने अपनी क़ौम से अधिक हिन्दू क़ौम के बढ़ाने की कोशिश की थी, किन्तु आर्य्यसमाजी लोग उन्हीं दानी धर्मात्मा बादशाहों को बदनाम करते हैं और कहते हैं कि मुसलमान बादशाह बड़े ज़ालिम थे (इसमें सन्देह ही क्या है, ख़्वाजा सा० ने हिन्दू रियासतों के अधिक होने से जो यह नतीजा निकाला है कि मुसलमान बादशाह हिन्दू क़ौम को बढ़ाने का प्रयत्न किया करते थे कितना हास्य, नहीं नहीं, लज्जाप्रद है, हिन्दुओं के मुल्क में इतने थोड़े समय में इतने अधिक मुसलमानों का होजाना ही उनके कट्टरपन तथा जुल्म का प्रत्यक्ष प्रमाण है)

हिन्दू रियासतों में खुल्लम खुल्ला पं० मदनमोहनजी मालवीय के आन्दोलन से हिन्दी भाषा का हुक्म होगया किन्तु मुसलमान रियासतों में हैदराबाद व भूपाल के सिवाय बहुत कम रईसों को उर्दू का ख़याल है (हिन्दी का इतना आन्दोलन करने पर भी अबतक बीसियों बड़ी २ हिन्दू रियासतों में उर्दू जारी है पर कितनी मुसलमान रियासतें हैं जहां हिन्दी का दख़ल है ? ज़रा ख़्वाजा सा० जांच तो करें, शोक है उनके इस तास्सुब पर)

ऐसे ही मुसलमान बादशाहों पर यह दोष लगाया जाता कि उन्होंने हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाया, किन्तु यह बिलकुल ग़लत है, यदि ठीक होता तो आज एक भी हिन्दू

इस मुल्क में बाक़ी न रहता, सब मुसलमान होजाते। किन्तु कुछ मुक़ामों के अतिरिक्त सब जगह हिन्दू अधिक हैं (पाठकगण देखिये ख़्वाजा सा० के तास्सुब को, मुसलमानी समय के इतिहास आदि सब को ख़्वाजा सा० झुठला कर दिन दोपहर ही आंख में धूल डाल रहे हैं। अजी ख़्वाजा साहब! मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं के साथ जो कुछ किया उसके लिये इतिहास तथा आप लोगों का ७ करोड़ होना ही प्रत्यक्ष प्रमाण है, रहा यह कि एक भी हिन्दू बाक़ी न बचता, सो इसके लिये इतना ही कहना पर्याप्त है कि, जब कि आप सबों ने एड़ी चोटी लगाकर एकदम तबलीग़ इस्लाम की घोषणा करदी है, तब देखना चाहिये कि कोई हिन्दू बचता है या नहीं। अजी हज़रत! यह क़ौम वह है जिस पर आप जैसे अनेकों के इससे भी बढ़कर ज़ुल्म और अत्याचार हुए हैं पर इसकी हस्ती नहीं मिटी)

सारांश यह कि अब आवश्यकता है कि मुसलमान रियासतें भी मुसलमानों के बढ़ाने की ओर ध्यान दें (ध्यान कब नहीं दिया था) जब कि भरतपुर और कश्मीर वग़ैरह हिन्दू रियासतों ने खुला खुली मुसलमानों को हिन्दू बनाने का काम जारी कर दिया है, (बिलकुल झूठ व बनावटी इलज़ाम) तब मुसलमान रियासतों को भी देर न करना चाहिये (आपके लिखने से बहुत पहिले ही मुसलमानी रियासतों में बड़े वेग के साथ यह कार्य्य जारी होगया है) यह कोई राजनैतिक विषय नहीं है जिसमें अंग्रेज़ी सरकार हस्तक्षेप करै, बरन यह १ मज़हबी और निजू बात है।

मैं यह नहीं चाहता कि रियासतों के नवाब अपनी हिन्दू रियाया पर कुछ जब्र करें या इस प्रकार से उन्हें मुसलमान

बनावें कि जो रियाया के अधिकारों के विरुद्ध हो, मेरी इच्छा तो यह है कि इस्लामी नियमों के अनुसार (तलवार स्वीकार करो या धर्म) बहुत नर्मी और प्रेम से उनको इस्लाम की ओर लाया जावे (क्या नर्मी, प्रेम और सच्चाई प्रगट करने पर कोई मुसलमान बनना स्वीकार करेगा ?)

इसकी सूरत यह है कि हरएक रियासत अपने यहां १ महक्मा मुसलमान बनाने का जारी करे, जो तमाम रियासत के रहने वालों की मज़हबी बातों पर विचार करके मुसलमान बनाने के उचित तरीक़े जारी करे। (हिन्दू रियासतों को इस पर ग़ौर करना चाहिये)।

रियासत के मध्यम श्रेणी के सब कर्मचारियों को आज्ञा देना चाहिये कि वे होशियारी और मुनासिब हिकमतों से रियाया को मुसलमान बनाने का प्रयत्न करें (एक दम से बिना किसी हथकंडे के मुसलमान करने में रियाया के भड़क उठने का भय है, इस कारण ख्वाजा साहेब ने ऐसा लिखा मालूम देता है) सब से अधिक अछूत और नीच जाति के लोगों को मुसलमान बनाने के लिये प्रयत्न करना चाहिये।

१—मुझको अल हज़रत खुसरो दक्खिन (नवाब हैदराबाद) से बहुत कुछ आशायें हैं और अल्ला ने उन्हें हज़ूर मारूफ़ की सी सिफ़्त दी है, वह चाहें तो सब कुछ हो सकता है (आपके लिखने की आवश्यकता नहीं वहां आप ही आप होरहा है)

जनाब बेगम साहबा भूपाल की तवज्जह यदि इधर हो जावे तो बेशुमार आदमी मुसलमान हो सकते हैं (उनकी तवज्जह इधर गई हो या न गई हो पर वहां आप का

मनोरथ सफल हो रहा है) बेगम सा०, उनके पुत्र और ओहदेदार मुझ से अधिक इस आवश्यकता को समझ सकते हैं।

नवाब सा० भावलपुर अब्बासी नसल से हैं। अब्बासियों ने इस्लाम की जो सेवायें की हैं वह सब को ज्ञात हैं, समय आ गया है कि अब्बासी शहज़ादे अपने बुज़ुर्गों के नाम को ज़िन्दा करके दिखावें, भावलपुर के इलाक़े में मुसलमान बनाने का बड़ा मैदान है।

नवाब रामपुर, जावरा, टौंक, पालनपुर और जूनागढ़ आदि को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये।

मुझे मंगरोल काठियावाड़ के नवाब सा० शेख़ जहांगीर मियां से पूरा यक़ीन है कि वह इस मैदान में सब से अधिक काम करेंगे।

रियासतों के नवाबों को किस ढंग से काम करना चाहिये, इसकी सलाह मैं नहीं देना चाहता, (सब कुछ बतला तो दिया अब तलवार चलवाना बाक़ी है) क्योंकि हर रईस की रियासत के जो हालात होते हैं उनको वे स्वयं जानते हैं और उन्हीं के अनुसार उन्हें काम करना चाहिये।

जिन रियासतों के ओहदेदारों को यह किताब मिले उन्हें चाहिये कि वे रियासत के हाकिमों को इसकी ख़ास २ बातें सुनायें।

२—दूसरी छोटी २ जागीरों और जमींदारियों के मुसलमान मालिक भी नवाबों के बराबर काम कर सकते हैं, वे अपने आधीन लोगों को जो आज्ञा दें, वे पूरी हो सकती

हैं, अछूत और नीच जाति के लोगों से प्रेम करके उनके बच्चों को इस्लामी तालीम दी जावे और खुद उनको मुसलमान होने का लालच दिया जावे और अपने असर से ईसाई और आर्य्यों को अपने इलाके में काम करने से रोका जावे (क्या यही आपकी ईमानदारी है ? अपने धर्म की बातें सुनाइये और आर्य्य तथा दूसरों को भी अपने धर्म की बातें सुनाने दीजिये, फिर देखिये लोग किसे ग्रहण करते हैं)

३—बिरादरियों के चौधरी व पंच बड़ा काम कर सकते हैं उनके अन्दर व्याख्यानदाताओं और बड़े २ रईसों से भी अधिक बल होता है, वे यदि चाहें तो बात की बात में बहुतसे आदमियों को मुसलमान बना सकते हैं, बिरादरी का ज़ोर बड़ी चीज़ है, उनको चाहिये कि नर्मी व हिक्मत के साथ और यदि आवश्यकता पड़े तो बिरादरी का ज़ोर दिखा कर बिना किसी ज़्यादती के नीच जातियों को मुसलमान बनावें ।

४—नम्बरदार व ज़ेलदार—इनका प्रभाव भी मुसलमान बनाने में बहुत काम दे सकता है, अपने २ इलाक़े में नम्बरदार और ज़ेलदार स्वतन्त्र हाकिम होते हैं, उनको चाहिये कि इस्लाम का हक़ अदा करें और नीच जातियों को मुसलमान बनाने में लग जावें ।

५—बड़ी २ रियासतों के ओहदेदार-ये एक तो अपने हाकिमों का ध्यान इधर आकर्षित कर सकते हैं दूसरे स्वयं भी अपने आधीन लोगों को मुसलमान बना सकते हैं ।

इन पांचों क़िस्म के लोगों को अछूत और नीच जाति के लोगों को मुसलमान बनाने और उनके लिये मुसलिम मकतब (पाठशालायें) खोलने का प्रयत्न करना चाहिये।

ऐ भाइयो ! होशियार हो जाओ, दुश्मन तुम्हारे भाइयों को बेदीन व मुरतिद (हिन्दू) बनाना चाहते हैं और इस्लाम तुम को पुकार कर कहता है कि उठो, मेरा हक़ अदा करो, ताकि क़यामत के दिन खुदा व रसूल के सामने तुम लज्जित न हो, (क्या यही अपील हमारे हिन्दू भाई भी न सुनेंगे ? क्या मुसलमानों द्वारा दिन दहाड़े अपनी जाति की लूट होते देखते रहेंगे ? मैं भी यह आप लोगों से विनती करता हूं कि ऐ हिन्दू भाइयो! उठो बहुत सो चुके, ७ करोड़ की चोरी तुम्हारी हो गई, ७ करोड़ अछूत और १ करोड़ अन्य लोगों की चोरी, नहीं २ लूट होने वाली है, अपनी पूंजी की रक्षा करो, नहीं तो शीघ्र ही २२ करोड़ के १४ करोड़ ही रह जाओगे और फिर धीरे २ शेष १४ करोड़ मुसलमानों के शिकार बन जावेंगे)

४—काश्तकार

खेती करने वाले लोगों को नीच जाति और अछूत क़ौमों से मिलने, उनसे काम लेने और उनके साथ काम करने के लिये बहुत मौक़ा होता है, उनका भी कर्तव्य है कि वे उन्हें मुसलमान बनाने का प्रयत्न करें और जब वे मुसलमान हो जावें तो उनके साथ सच्ची भाई के तुल्य हमदर्दी करें।

इस पेशा में माली, बाग़बान और हर प्रकार के खेती करने वाले मज़दूर वग़ैरह शामिल हैं। आलिम लोगों को चाहिये कि वे इन्हें इस्लाम के मसले सिखावें, जिसमें ये हिन्दुओं को मुसलमान बना सकें। साधारण और ग़रीब लोगों में दीन की सेवा का जोश अधिक होता है।

५—दस्तकार

दस्तकारों की जमाअत बहुत बड़ी है, सोने, चांदी, लोहे, मिट्टी, लकड़ी, पत्थर, रुई, कपड़े और कागज़ के काम करने वाले, तसवीर खींचने वाले, और हर प्रकार के कारीगर तमाम शहरों और देशों में पाये जाते हैं, आलिमों को चाहिये कि पहिले उन्हें इस्लामी मसलों से आगाह करें पीछे उन्हें मुसलमान बनाने का काम करने के लिये प्रोत्साहित करें, ये लोग बहुत अच्छी तरह और सच्चे जोश से इस काम को कर सकते हैं।

६—तिजारत करने वाले

प्रोफेसर आरनल्ड ने लिखा है कि इस्लाम को बुजुर्गों और तिजारत करने वालों ने फैलाया था, अब वह समय है कि तिजारत करने वाले अपने कर्त्तव्य को भूल गये हैं और जानते भी नहीं कि उनके पूर्वजों ने क्या २ काम किये थे, आवश्यकता है कि ये लोग अपने पुराने कर्त्तव्य को याद करें और मुसलमान बनाने का कार्य्य फिर से आरम्भ करदें।

थोक बेचने वालों के पास दूर २ से व्यापारी आते हैं, उन को चाहिये कि प्रत्येक व्यापारी को इसलाम का सन्देसा दें। खुर्दा बेचने वालों का सम्बन्ध साधारण ग्राहकों से होता है, दूकान पर बैठे दावत इसलाम का काम कर सकते हैं। न पैसे का खर्च है और न समय का और मुफ़्त में सवाब (पुण्य) मिलता है, उनको चाहिये कि जब नीच जाति के लोग कोई चीज़ लेने आवैं तो बड़े प्रेम और नर्मी से उन्हें मुसलमान बनने का लालच दें और मुसलमानों में जो बराबरी का बर्ताव होता है वह उन्हें बतावें।

फेरी करने वाले दुकानदारों को बड़ा मौक़ा है वह घरों में जाकर स्त्रियों को इस्लाम की खूबियां बयान कर सकते हैं, किसी दूर के मुल्क में जाकर भी इस्लामी दावत दे सकते हैं, इस्लाम इन्हीं घूमने वाले सौदागरों ने फैलाया था, दल्लाली का पेशा भी इस्लाम की दावत के लिये उचित है। जो लोग दल्लाल होते हैं उन्हें हर दूकान पर जाना पड़ता है, चार बातें व्यापार की करें तो एक इस्लाम की बात भी सुना दें।

(क्या हिन्दू लोग अपनी स्त्रियों को फेरीवालों को अपने घर बुलाने व उनसे वस्तुयें लेने से न रोकेंगे ? कितनी हिन्दू स्त्रियां इन फेरी वाले मुसलमान सौदागरों से भ्रष्ट की जाती हैं यह किसी हिन्दू ने सोचा है ?)

७—नौकर पेशा लोग

दफ़्तरों के बड़े ओहदेदार यदि आर्य्य हों तो वे बड़े जोश से काम करते हैं। मुसलमान ओहदेदारों को चाहिये कि वे भी आर्य्यों की तरह अपने सच्चे मज़हब के फैलाने का ध्यान रक्खें। अपने अधीन लोगों को इस्लाम की ओर लालच दिलाने का पूरा अवसर उनके पास है।

सब से अधिक और उत्तम काम पटवारी कर सकते हैं उनको हर गांव में जाना होता है, यदि वे नीच जाति के लोगों को इस्लाम की दावत दें तो बड़ा लाभ होगा।

पटवारियों की तरह देहाती पोस्टमास्टर भी सरलता से काम कर सकते हैं। जब कोई नीच जाति का हिन्दू डाकघर

में आवे (जब कि वह सरकारी मकान और सरकारी ड्यूटी पर होगा) तो उससे दो बातें इस्लाम की कर लेनी चाहिये। धीरे २ उसका प्रभाव पड़ेगा।

देहात के पुलिस अफसर व सिपाही नर्मी और प्रेम से नीच लोगों को मुसलमान करना चाहें तो सफलता हो सकती है।(सरकार से तनख़्वाह पावे काम मुसलमानों का करे कैसा अन्धेर !)

नहर के मुलाज़िमों को भी देहात में जाना पड़ता है, वे भी नीच जाति के लोगों को मुसलमान बनाने का काम कर सकते हैं।

डाक्टर और कम्पाउन्डर लोगों का साधारण मनुष्यों से सम्बन्ध रहता है, उनको चाहिये कि रोगियों का ऐसे प्रेम से इलाज करें जिससे मुसलमानों का भ्रातृभाव उन पर प्रगट हो और मुसलमान होने का उन्हें लालच दिया जावे।

ख़ुफ़िया पुलिस के आदमी इस्लामी ख़बरें पहुंचाने का काम भी कर सकते हैं और दावत इस्लाम का फ़र्ज भी उन्हें अदा करना चाहिये क्योंकि उन्हें जगह २ जाना पड़ता है।

खानों, मिलों और कारख़ानों के वे बड़े २ ओहदेदार, जिनके नीचे कुछ आदमी हों, बड़ी सफलता से मुसलमान बना सकते हैं, क्योंकि मज़दूर बहुधा नीच लोग होते हैं, यदि वे मुसलमान बनाने की कोशिश करें तो हज़ारों मज़दूर मुसलमान हो सकते हैं।

अंग्रेज़ों के ख़ानसामे व बहरे अंग्रेज़ों के ईसाई नौकरों और ख़ासकर भङ्गियों को मुसलमान बनाने की कोशिश करें।

(भंगियों को मुसलमान बना कर ख्वाजा सा० केवल उन्हें भ्रष्ट ही करना चाहते हैं, क्योंकि उनके शादी विवाह के लिये तो आप अपनी इसी किताब "दाइये इस्लाम" में इन्कार कर चुके हैं फिर उनके हिंदू बने रहने में उनकी क्या हानि है ?)

रेलवे कर्मचारियों को भी मुसाफ़िरों में तबलीग़ इस्लाम करनी चाहिये, वे बहुत अच्छा और प्रभावशाली काम कर सकते हैं ।

याद रहे कि उपरोक्त ढँगों से काम करने में पग २ पर हिन्दू, आर्य्य और ईसाई लोग छेड़ छाड़ करेंगे, बहुधा उनकी नौकरी, पेशा और रोज़गार पर भी आबनेगी, इस कारण दावत इस्लाम का काम बहुत बचाव व होशियारी से करना चाहिये, कि जिसमें शत्रुओं की चोटों से बचे रहें और यदि कुछ हानि भी पहुंचे तो खुदा की राह पर उसे सहन करना चाहिये, अल्लाह मदद करैगा और अपने ग़ैबी ख़ज़ाने से उन्हें रोज़ी देगा, किसी बात से डरना या कम-हिम्मत न होना चाहिये, पहिले तो मुसलमानों ने इस मैदान में अपनी और अपने बाल बच्चों की जानें तक देदी हैं, घरबार बरबाद करदिया है, मुसलमान तो हर समय परीक्षा में हैं, किसी दशा में भी उन्हें निराश न होना चाहिये, आवश्यकता है कि मुसलमान एक दूसरे की मदद करने पर तय्यार हो जावें ।

(न केवल निजी नौकर किन्तु सरकारी नौकरों को भी सरकारी इमारतों तक में सरकारी ड्यूटी पर होते हुये भी मुसलेमान बनाने के लिये उभारा गया है, यदि उपरोक्त महकमों के मुसलमान आफिसर व कर्मचारी मुसलमान बनाने का कार्य आरम्भ करदेंगे तो हिन्दुओं की रक्षा कहां और कैसे

होगी, पाठक विचार करें। हिन्दुओं को चाहिये कि इस प्रकार से अन्याय व अत्याचार करते हुये किसी सरकारी आफिसर या कर्मचारी को पावें तो शीघ्र इसकी रिपोर्ट सरकार में करें, यदि वे चुप रहे और नीच जाति के लोगों को ये लोग मुसलमान बनाते रहे, तो कबतक हिन्दू-जाति जीवित रह सकती है स्वयं विचार करलें)

८- राजनैतिक लीडर, सम्पादक, कवि व लेखक

इन तमाम लोगों का काम दिमाग़ी व इल्मी है। ख़िलाफ़त के लोगों को यह ख़याल छोड़ देना चाहिये कि यदि वे मुसलमान बनाने का काम करेंगे तो हिन्दू नाराज़ हो जावेंगे, (पानी अब सर से ऊंचा पहुंच चुका है) १६ मार्च को दिल्ली में सभा हुई थी जिसमें हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख सब जमा थे। डाक्टर अन्सारी उस सभा के प्रधान थे, उस सभा में हकीम अजमलखां साहेब ने बड़ी नर्मी और संजीदगी से फ़रमाया था कि मैं मुसलमान हूं और मुसलमानों को मुर्तिद (हिन्दू) होने से बचाना मेरा कर्तव्य है और मैं इस काम की मदद करना मुल्की कामों के लिये हानिकारक नहीं समझता।

हकीम साहेब के इस व्याख्यान के विरुद्ध देशबन्धु साहेब ने बड़े कड़े शब्दों में भाषण दिया और सरदार गुरुबख्शसिंह सा० ने कहा कि मेरे पास १ हिन्दू साहेब बैठे हैं जो कहते हैं कि मैं डण्डे और छुरी से काम लूंगा, यानी मुसलमानों पर डण्डे और छुरी चलाऊंगा, (नितान्त झूंठ) इस पर सरदार साहेब ने बहुत अफ़सोस किया और कहा कि जब ऐसे विचार हो गये हैं तो एकता की क्या आशा हो सकती है ?

सारांश मुसलमानों को तो छुरी और डण्डा चलाने की आवश्यकता नहीं है, उनको तो अपने भाइयों को हिन्दू होने से बचाना और दूसरे अछूत हिन्दुओं को मुसलमान बनाना है। उनको किसी से लड़ना झगड़ना नहीं है, हां लड़ाई ख्वाह-मख्वाह सर पर आ जावे तो उसे सहन करना और मैदान से पीछे न हटना चाहिये। (खूब ! ख्वाजा सा० ने कैसी पेशबन्दी की है, मलावार, मुल्तान, अमृतसर, अजमेर, सहारनपुर, आगरा, गोंडा और शाहजहानपुर आदि में हिन्दुओं ही ने छुरे, लाठी, तलवार और बन्दूक़ चलाई होंगी ? हिन्दुओं को जान से मार डालने, मुसलमान बनाने, उनकी दूकानों को लूटने, मन्दिरों को जलाने, मूर्तियां तोड़ने, स्त्रियों पर अत्याचार करने आदि के निन्दनीय कार्य्य भी हिन्दुओं ही ने किये होंगे ? शोक ! उपरोक्त सारे अत्याचार करके भी यही कहा जाता है कि मुसलमान तो दुधपिये बच्चे हैं वे कुछ जानते भी नहीं, हां हिन्दू उन पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं। पर उपरोक्त नगरों की मिसालें सामने हैं उनके होते हुये भी क्या आंखों में धूल डाली जा सकती है ?)

ख़िलाफ़त के लीडरों को चाहिये कि एकता बनाये रखने के साथ ही साथ दीन की रक्षा और वृद्धि का फ़र्ज भी अदा करें और मुसलमान बनाने का कार्य्य सुसंगठित रूप से जारी कर-दें जिसमें सारे हिन्दुस्तान की ख़िलाफ़त कमेटियां मुसलमान बनाने का कार्य करने लगें (अक्सर जगह ख्वाजा साहेब की सलाह के अनुसार ख़िलाफ़त कमेटियों ने कार्य्य आरम्भ कर दिया है)

ख़िलाफ़त ने मुसलमानों में एक विशेष प्रकार का संगठन उत्पन्न कर दिया है और खुदा की फ़ज़ल से अब तुर्कों की

भी सुलह हो गई इस वक्त खिलाफ़त कमेटियों को इस्लाम की रक्षा व वृद्धि का कार्य्य हाथ में लेना चाहिये। (ठीक है, इसीलिये हिन्दुओं ने खिलाफ़त फण्ड में लाखों का चन्दा दिया, उसके सभासद् बने और जेल तक गये। हिन्दू लोग अच्छे उल्लू बने। अब 'लाला की जूती उन्हीं के सर' वाली मसल इन पर खूब चरितार्थ होती है)

अमॅइत उलॅमा के अक्सर लोगों का तो इधर ध्यान आकर्षित हो गया है, जो शेष हैं उन्हें भी इधर शीघ्र ध्यान देना चाहिये।

जो मुसलमान कांग्रेस के लीडर या काम करने वाले हैं उनको इसी आंदोलन द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना चाहि-ये। यदि सब अछूत जातियें मुसलमान हो जावैं तो उनका पल्ला हिन्दुओं के बराबर हो जावेगा और स्वराज्य प्राप्त होने पर ये हिन्दुओं के गले में चक्की का पाट न रहेंगे, जिनको उठाकर हिन्दुओं को चलना पड़े, वरन् वे स्वयं अपने पैर खड़े हो सकेंगे। हिन्दू २२ करोड़ हैं, मुसलमान केवल ८ करोड़ हैं यदि ६ करोड़ अछूत मुसलमान हो जावैं तो फिर उनकी तादाद भी १४ करोड़ हो जावे और फिर उनमें इतनी निर्बलता न रहे जो वे हिन्दुओं के लिये वारे खातिर हों। इस वास्ते कांग्रेस के मुसलमान लीडरों को सब से अधिक अछूत हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयत्न करना चाहिये (इन दिनों जगह २ जो झगड़े हुये उनमें मुसलमानों की निर्बलता खूब देखने में आई, अब १४ करोड़ हो जावेंगे तब संभव है इसी प्रकार की और निर्बलता आ जावै। ख्वाजा सा० ६ करोड़ अछूतों पर ही अधिक क्यों ज़ोर देते हैं २२ करोड़ के २२ करोड़ सभी को क्यों लेने का प्रयत्न नहीं करते और फिर

तब तो मुसलमानी स्वराज्य निश्चय ही प्राप्त हो जावेगा) इनका काम यही है कि अपने २ इलाक़ों की कांग्रेस कमेटियों द्वारा उन जातियों की रिपोर्ट तैयार करें जहां इस्लाम की वृद्धि की आवश्यकता है ताकि इस्लाम के प्रचारक वहां काम कर सकें। रिपोर्ट के अतिरिक्त उनको यह भी चाहिये कि हिन्दुओं में मुसलमानों के खिलाफ़ जोश या ग़लत-फ़हमी न पैदा होने दें (यानी उन्हें बुद्धू बनाकर, जैसे अजमेर के २-४ हिन्दू कांग्रेस कार्य्यकर्त्ताओं को बनाया गया है, अपना उल्लू सीधा करें)

मुसलिम समाचार पत्रों और मासिकपत्रों का फ़र्ज़ है कि लगातार ऐसे लेख लिखें कि जिनसे इस्लामी प्रचारकों को माली व अमली सहायता मिले और क़ौम में जोश मुसलमान बनाने के लिए पैदा हो।

शुद्धि न लिखो इर्तदाद लिखो—यह बात सब से अधिक ध्यान देने की है कि मुसलिम समाचारपत्रों को आर्य्यों के शब्द "शुद्धि" को इस्तेमाल न करना चाहिये उसके बदले इर्तदाद व मुर्तिद लिखना ठीक है, क्योंकि शुद्धि के अर्थ 'पाक' होने के हैं, अतएव यदि मुर्तिद होने को मुसलमान अपनी क़लम या ज़बान से पाक होना लिखेंगे तो बहुत बड़ा पाप होगा, हां यदि अशुद्धि लिखा जावे तो ठीक है यानी शुद्धि के पहिले अलिफ़ लगा दिया जावै।

मुसलिम प्रेसों के लिये यह बात बहुत ध्यान देने की है कि मौजूदा जोश ठण्डा न पड़ जावै, इसको सदा स्थिर रखने और लीडरों को जगाते रहने की आवश्यकता है।

मुसलिम कवियों को भी इधर ध्यान देना चाहिये, उनको

सरल शब्दों में ऐसी कविता करनी चाहिये जिसमें मुसलमानी अक़ीदे नमाज़ रोज़ा के बयान हों, अभी जितनी इस्लामी कवितायें मौजूद हैं उन्हें फिर से तरतीब देकर और पूरी करके छापना चाहिये।

इस्लामी स्वांग—हिन्दुओं में ड्रामा के ढंग पर स्वांग का दस्तूर है, स्वांगों में हिन्दुओं की लड़ाई के हाल और अन्य हिन्दू सभ्यता की बातें किस्सों के ढंग पर दिखाये जाते हैं, देहात में इन स्वांगों का बड़ा शौक़ है, बाज़ार में मलखान की लड़ाई के नाम से एक पुस्तक बिकती है, इसको मुसलिम कवियों के पास पहुंचाना चाहिये ताकि वे देखें कि जिन मल-खाना राजपूतों को मुर्तिद (हिन्दू) बनाने का प्रयत्न किया जारहा है उनके ख़यालात व हालात क्या हैं और उन्हीं ख़यालात के आधार पर मुसलमानी बहादुरी के क़िस्से स्वांग के ढङ्ग पर लिखने चाहियें। स्वांग करने वाले आमतौर से मुसलमान हैं। मेरे इलाक़े में नसीरा नाम का एक विख्यात स्वांगिया है जिसके गाने और नाच को हज़ारों हिंदू व मुसलमान बड़े शौक़ से देखते व सुनते हैं। मैंने उससे इस्लामी स्वांग करने को कहा, तो उसने उत्तर दिया कि यदि हमको इस्लामी स्वांग लिख दिये जावें तो आयन्दा हम इस्लामी स्वांग ही किया करेंगे और हिन्दू स्वांग छोड़ देंगे। उसने यह भी कहा कि स्वांग करने वाले अधिकतर मुसल-मान हैं और वे सहर्ष क़ौमी ख़िदमत करने को तय्यार हो जावेंगे (इसके लिए हिन्दुओं को क्या करना चाहिये, सब से सरल उपाय यही है कि उन्हें बुलाना बंद करदें)

सम्भव है आलिम लोग इस प्रस्ताव के विरुद्ध हों किन्तु मैं प्रार्थना उन लोगों से करता हूं जो गाने बजाने और स्वांग

को नाजायज़ नहीं समझते और मैं भी उन्हीं में हूं। (क्यों न हो इस्लाम तो फैलता है)

मुसलमान पुस्तकें लिखनेवालों का भी फ़र्ज़ है कि सब काम छोड़कर बस इसी ओर लग जावें। मुसलमान बनाने के तरीक़े किताबों से छानछून कर प्रकाशित करें, यही नहीं वरन् मुसलमानों की बहादुरी के हालात भी तय्यार करने चाहियें, जिन्हें सुनने से हिन्दू राजपूतों पर प्रभाव पड़े। मुसलमानों के भ्रातृभाव की मिसालें भी लिखना चाहिये जो अछूतों को सुनानी चाहियें, इस्लाम की रक्षा के लिये उनके अक़ीदों के छोटे २ ट्रैक्ट लिखने चाहियें जो मुसलमानों में खूब बांटे जावें। ग़रज़ कि समय आगया है कि वे अपने दिल व दिमाग़ और इल्म को इस तरफ़ लगावें और साबित करदें कि मुसलमानों का हरएक गिरोह इस्लाम के प्रचार में लग गया है और कलमा "ला इलहइल्लिला" की स्टीम से जो मेशीन चल रही है उसके सब पुर्ज़े पूरी तरह से अपने २ काम में लगे हुये हैं।

९—डाक्टर व हकीम

स्वतन्त्र हकीम व डाक्टर मुसलमान बनाने की ओर अपना ध्यान दें तो उनके प्रभाव से बहुत काम होसकता है। देशी हकीमों का आप लोगों पर बहुत प्रभाव होता है। हिन्दू लोग भी हकीमों से इलाज कराते हैं, यदि उनके अन्दर इस्लाम की वृद्धि का जोश हो तो दीन की सेवा बहुत कर सकते हैं।

१०—गाने वाले

क़व्वाल हर जगह मौजूद हैं, क़व्वाली में हर प्रकार के हिन्दू लोग शामिल होते हैं। यदि क़व्वाल लोग इस्लामी

तौहीद की ग़ज़लें याद करें और इस्लाम की वृद्धि के ख़याल से उन्हें गायें तो अल्ला ताला असर पैदा करेगा।

हर प्रकार के गाने वाले व बाजे बजाने वालों को तय्यार करना चाहिये कि हर मजलिस में १, २ चीज़ें इस्लामी शान की ज़रूर गावें। गाने वाली रण्डियों को भी ऐसी ग़ज़लें याद कराई जावें।

सम्भव है कि आलिम लोग इसमें आपत्ति डालें, इसलिये अच्छे गले के मुसलमान लोगों की टोलियां बनानी चाहियें, जो जगह २ इस प्रकार की ग़ज़लें गाते फिरें, हिन्दुस्तान में गाने का व्याख्यान के मुक़ाबले में अधिक प्रभाव पड़ता है, गाने वालों को इस आन्दोलन में अवश्य शामिल करना चाहिये जो लोग इसे पसन्द न करें उनके क़ायल करने के लिये मैं हुज्जत नहीं करता। मेरा कहना केवल उन लोगों से है जो इसको ठीक समझते हैं।

११—भीख मांगने वाले

मुसलमानों में भिखारी बहुत अधिक हैं। क़ौम उनको ठीक करना चाहती है पर वे ठीक तो जब होना होगा हो जावेंगे। इस समय तो उन को काम का आदमी बनाना चाहिये और वह यह है कि उनको इस्लाम की वृद्धि की आवश्यकता बताई जावे और उनको कहा जावे कि वे इस प्रकार से कार्य करें।

जो फ़क़ीर भिखारी का काम करते हैं उनको ऐसी २ सदायें (आवाज़ें) सिखाई जावें, जिनके कहने से इस्लाम की खूबी ज़ाहिर हो। जो गाकर भीख मांगते हैं उनको भी इस प्रकार के गाने याद कराये जावें, कि जिमसे इस्लाम की खूबियां प्रगट हों।

अन्धे भीख मांगने वालों का गला अच्छा होता है, उनको विशेष रीति से इस प्रकार की ग़ज़लें याद कराई जावें जिनसे जनता पर प्रभाव पड़े।

मूंडचिरे फ़क़ीर वे होते हैं जो अपने शरीर में घाव लगाकर भीख मांगते हैं, उनसे भी काम लेना चाहिये, चूड़ियां बजाने वाले फ़क़ीर नज़ीर अकबराबादी की कविता पढ़ते हैं, अब उनको इस्लामी कविता याद कराई जावें। जो गदागर फ़र्ज़ी भिखारी बनजाते हैं, वे ख़बर लाने का काम अच्छा कर सकते हैं और भीख मांगने वाली स्त्रियां भी घरों में जाकर ख़बरें लाने का काम बहुत अच्छा कर सकती हैं।

१२—ख़बर-रसानों का काम

इनके बारे में पहिले व्यौरेवार लिख दिया गया है अब फिर लिखने की आवश्यकता नहीं। हां इतना लिखना ज़रूरी है कि यदि ख़बर लाने का महक्मा क़ायम हो गया तो केन्द्र का बल बहुत बढ़ जावेगा और यह महक्मा केवल इस्लाम की वृद्धि का ही काम न करेगा वरन् प्रत्येक इस्लामी आन्दोलन को इससे लाभ पहुंचेगा। मुसलमानों को इसमें ढील न करना चाहिये। ऐसा न हो कि मुसलमान तो सोचते ही रहें और दुश्मन लोग इसको करके दिखादें।

क़ानूनपेशा के लोग

गिरोहों के विभाग करते समय वकीलों का ज़िकर रह गया; यह गिरोह क़ौम का सब से अधिक ज़रूरी है। ख़िलाफ़त व कांग्रेस में इस जमाअत ने सब से अधिक काम किया, इस गिरोह को जनता से रात दिन मिलने का अवसर मिलता

है, इनको भी इस्लाम की वृद्धि का काम करना चाहिये, बल्कि इस गिरोह को तो रक्षा व प्रचार के सारे प्रबन्ध अपने हाथ में लेना चाहिये।

काम का विभाग

काम बांटते समय इस बात का ध्यान रक्खा जावे कि एक जमाअत (गिरोह) के हाथ में जो काम या अधिकार हों उसमें दूसरे गिरोह के लोग हस्तक्षेप न करें।

मुसलमानों के कामों में सदा यह त्रुटि रहती है कि वे काम को बांटना नहीं जानते। एक ही आदमी के हाथ में कई कई अधिकार दे देते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि आपस में एक दूसरे से खिचा खिची होजाती है।

काम बांटते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि उस गिरोह के प्रबन्धक तजुर्बेकार और ईमानदार हों। बड़े २ आदमियों को उनकी ख्याति के कारण ही प्रबन्धक न बना देना चाहिये, इससे बहुधा बड़ी हानि होती है। प्रबन्धक वे होने चाहियें जिनके पास उस काम के अतिरिक्त घर बाहर कहीं का काम न हो। चाहे वे विख्यात हों या न हों।

अमले के प्रबन्धकों को छोटे २ मक्तबों (पाठशालाओं) का खोलना बहुत ज़रूरी है जहां नौमुसलिमों के बालकों को इस्लाम की ज़रूरी २ बातें बताई जावें।

दूसरी ज़रूरी बात यह है कि व्याख्यान देने वालों, प्रबन्धकों और शास्त्रार्थ करने वालों की अलग दो जमाअतें नियत की जावें एक ही से दो काम लेने उचित नहीं वरन् अधिक हानि होती है।

इस आंदोलन में सब से अधिक इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि शिया, सुन्नी, सूफ़ी और वहाबियों के आपस के मतभेद की बातों को इसमें न लाया जावे। इसका उपाय यही है कि हर फ़िरक़े के कारकुन अलग २ नियत किये जावें। एक दूसरे से मिलना बहुत हानिकारक होगा।

गाने की एक शाखा ज़रूर होनी चाहिये, आलिमों को इस में आपत्ति हो तो मशायख़ की ओर से अलग यह शाखा स्थापित करना चाहिये और इसकी सूचना केन्द्र को दी जावे ताकि उन्हें सब बातों की सूचना मिलती रहे।

किन २ जातियों व स्थानों में काम किया जावे

किन २ जातियों और स्थानों मे काम किया जावे इसका निश्चय कार्य्य करने पर हो सकेगा। मगर मेरे ख़याल में सब से अधिक आवश्यकता नीच जातियों में काम करने की है, विशेषकर चमार व भंगियों में पूरे बल से काम करना चाहिये, बहुतसे चमार ईसाई हो गये हैं, हम उनको मुसलमान बना सकते हैं या जो ईसाई नहीं हुये उनको मुसलमान बनाने में सरलता होगी। गोन्ड, भील, कंजर और घूमनेवाली जातियों को इस्लाम का सन्देशा सुनाना चाहिये।

रियासत हैदराबाद दक्खिन में बहुत बड़े पैमाने मे काम करना चाहिये। वहां आसानी से लाखों आदमी मुसलमान हो सकते हैं (सचाई फूटकर निकल आई। मुसलमान राजा होने से बेचारे ग़रीबों का धर्म भ्रष्ट करने में अवश्य आपको आसानी है)। मलाबार और मद्रास के इलाक़ों में भी ध्यान देना चाहिये।

सिन्ध, गुजरात, काठियावाड़ ऐसे मैदान हैं कि यहां हर-एक आंदोलन बहुत जल्द फलने फूलने लगता है। इन जगहों में पीरों और आग़ाख़ानी मिशन को शामिल करना ज़रूरी है।

बंगाल के अनगणित अनपढ़ मुसलमानों को पक्का करना ज़रूरी है नहीं तो बहुत भय है।

ब्रह्मा में बड़ा मैदान है। वहां की स्त्रियों से शादी करने से इस्लाम की खूब वृद्धि हो सकती है, ब्रह्मा में रोज़गार भी बहुत है, बेकार मुसलमान वहां जावें रोज़ी भी कमावें और शादियां भी करके स्त्रियों का मुसलमान बनावें, ब्राह्मी लोगों में तास्सुब नहीं होता, वहां शादियों के द्वारा इस्लाम फैलाना बहुत सरल है।

(इतना लिखकर ख़्वाजा सा० ने एक पंक्ति में बहुतसी बिन्दियें देकर छोड़ दिया है। इसका तात्पर्य या तो इत्यादि २ का होता है या यह हुआ करता है कि लेखक को कुछ और लिखना है किन्तु किसी कारण या संकोच वश नहीं लिखता और पाठकों पर छोड़ देता है, ज्ञात नहीं कि ख़्वाजा सा० ने किस अभिप्राय से ऐसा किया है। यहां पर इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, सम्भव है इससे भी अधिक महत्व की कोई बात मुसलमान बनाने की लिखना चाहते हों, जैसा कि सुना जाता है कि प्रथम संस्करण में लिखा था, किन्तु संकोच-वश उसे न लिखकर बिन्दियें दे दी हैं। ख़ैर उनका अभिप्राय कुछ हो, पाठक भी ख़्वाजा सा० के बताये हुये हथकण्डों को पढ़कर अपनी इच्छानुसार इस जगह बिन्दियें देने का अभि-प्राय निकाल लें)

हिन्दू मुसलमान देशी रियासतों में, जहां मज़हब बदलने की क़ानूनी मनाही न हो, प्रचार का काम अच्छी तरह हो सकता है।

सारांश प्रत्येक शहर, क़सबा और गांव में व प्रत्येक कार-खाने में बल्कि प्रत्येक घर में मुसलमानी धर्मप्रचार व मुसल-मान बनाने के अवसर प्राप्त हैं। मुसलमानों को उचित है कि आलिमों पर इस काम को न छोड़दें किन्तु ध्यान रक्खें कि उनका भी कर्त्तव्य है और वे भी यह काम कर सकते हैं।

न कहीं दूर जाने की आवश्यकता है और न चन्दा जमा करने की, न सभा क़ायम करने की ज़रूरत है और न प्रचा-रक को मौलवी बनने और बड़ी योग्यता प्राप्त करने की, इस्लाम का प्रचार तो बहुत सरल है, प्रत्येक मनुष्य उसे कर सकता है यदि वह करना चाहे। केवल बकवास करने या एतराज़ जड़ने की आदत न होना चाहिये। जैसा कि आज-कल बाज़ मुसलमान लोग सिर्फ़ ताना देने और दूसरों की बुराई करने के सिवा और कुछ नहीं करते, केवल यही कहते हैं कि मौलवियों ने यह त्रुटि की, मशायख़ यह बात भूल गये, और लीडर कुछ ध्यान नहीं देते। कोई इनसे पूछे कि तुम खुद क्या करते हो, केवल चन्दा देदेने से कर्त्तव्य पूरा नहीं होता, ज़बान से भी काम करो, क़दम से भी काम करो और समय भी इस कार-ख़ैर में लगाओ।

उपरोक्त सारी पुस्तक के लिखने से मेरा यह अभिप्राय है कि मुसलमानों के दिल, दिमाग़ और ज़ेहन को सोचने और काम के ढंग निश्चय करने का एक रास्ता मालूम हो जावे और हर गिरोह में मुसलमानी धर्म-प्रचार और मुसलमान बनाने का शौक़ पैदा हो जावे।

मनुष्य का काम केवल प्रयत्न करने का है उसका पूरा करना खुदा के हाथ है, वही नीयत और इरादे का देखने वाला और सीधे रास्ते पर चलाने वाला है और उसी से यह आखरी दुआ है कि इलाही सीधा रास्ता दिखा जिन पर तेरा इनाम है उनके रास्ते पर चला और जिनसे तू नाराज़ है उनके रास्ते से बचा।

(उपरोक्त वाक्य लिखकर ख्वाज़ा हसन निज़ामी सा० ने अपनी पुस्तक समाप्त की है। आगे उन्होंने जो लिखा है उससे ज्ञात होता है कि प्रथम संस्करण विना मूल्य ही बांटा गया है और यह दूसरा संस्करण अफ़रीका की प्रबन्धकर्त्तृ-सभा की प्रेरणा पर छपा है। दफ़्तर का पता लिखा है-हलक़ा मशायख़ बुकडिपो दिल्ली। और टाइटिल की पीठ पर भी "मदर्सा दाइयान इस्लाम" के संबन्ध में कुछ लिखा गया है। हलक़ा मशायख़, मदर्सा दाइयान इस्लाम तथा १, २ मास के भीतर भीतर ही भारतवर्ष के अनेक नगरों में मुसलमानों की ओर से एक ही ढंग के झगड़ों से साधारण से साधारण मनुष्य भी यह नतीजा निकाले विना नहीं रह सकता कि मुसलमानों ने, जो कुछ ख्वाजा सा० ने लिखा है, उस पर पूरा पूरा ध्यान दिया है, मेरे एक मित्र ने कहा कि मेरी दूकान पर अक्सर फ़क़ीर इन दिनों आये जो बने हुये ज्ञात हुये और जो हमारी आपस की बातें बहुत ध्यानपूर्वक सुनने का प्रयत्न करते थे, यह सब क्या है? भूपाल और हैदराबाद में जिस ज़ोर के साथ मुसलमान बनाने का कार्य्य इन दिनों हो रहा है उसको देखकर कौन आदमी है जो उनके संगठन से इन्कार कर सकता है, इस किताब में जो जो तरकीबें लिखी गई हैं उनमें से लगभग सभी पर मुसलमान लोगों ने ध्यान

दिया है, कार्य्य भी होने लगा प्रतीत होता है। अब प्रश्न यह होता है कि हिन्दुओं को क्या करना चाहिये, रात दिन इन का और उनका चोली दामन कासा साथ है, एक तो हिन्दू वैसे ही बहुत सरल-हृदय के हैं, दूसरे उनके अन्दर छल व कपट नहीं है, तीसरे अक्सर लोग इनका बहिष्कार करना चाहते भी हैं तो इनका धर्म, इनकी सरलता तथा इनकी निर्बलता इन्हें करने नहीं देती। कोई कहता है कि इनसे फल व तरकारी न ख़रीदो, कोई कहता है इनसे दूध मत लो, कोई कुछ कहता है और कोई कुछ, पर जो मनुष्य उपरोक्त पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ेगा उसे ज्ञात होजायगा कि इन छोटी मोटी बातों से इतने भारी २ षड्यन्त्रों का मुक़ाबला करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है)

(जब मैं इस पुस्तक की बातों को हिन्दी में लिखने लगा तो कई लोगों ने मुझ से कहा कि उनकी प्रत्येक तरकीब का खण्डन भी साथ के साथ लिखते जाना, पर जब मैं सारी किताब पढ़कर लिखने बैठा तो हैरान होगया कि क्या खण्डन लिखूं। हिन्दुओं में इतना बल नहीं कि वे भी उसी प्रकार से उतने महकमे बनावें और उनके द्वारा अछूतों तथा नीच जाति के लोगों को मुसलमान होने से बचावें, अपनी रक्षा करें और नौमुसलिमों को शुद्ध करें। ख़्वाजा साहब कहते हैं कि ६, ७ करोड़ अछूत हमारी ओर आजावें तो हम और हिन्दू बराबर बराबर होजावें और फिर आपस में एक दूसरे की बराबरी होजावे और स्वराज्य मिलजाने पर हम लोग हिन्दुओं को भार न हों, पर यदि हिन्दू यहां के सब नौमुसलिमों और ईसाइयों को शुद्ध करलें या सारे मुसलमान व ईसाई ठीक रास्ते पर

आकर अपने बुज़ुर्गों का धर्म स्वीकार करके एक ईश्वर की शरण लें और उसके बताये हुये एक सीधे वैदिक मार्ग पर चलना आरम्भ करदें तो यह मेरा दावा है कि स्वराज्य मिलने में एक क्षण की भी देर न लगेगी। अतएव ऐ मुसलमान और ईसाई भाइयो! यदि आप निश्चय स्वराज्य लेना चाहते हैं तो मेरे उपरोक्त निवेदन पर ध्यान दीजिये। २२ करोड़ हिन्दुओं को ७ करोड़ मुसलमानों या ५० लाख ईसाइयों के साथ मिलने में बहुत विलम्ब लगेगा और कठिनता भी बहुत होगी, किन्तु ७ करोड़ मुसलमानों और ५० लाख ईसाइयों को, जिनमें से अधिकतर हमारे हिन्दू भाई ही हैं, २२ करोड़ के साथ मिलने में बहुत कम समय लगेगा और यह काम बड़ी सरलता से हो भी सकता है, क्योंकि एक तो वे हमारे ही हिन्दू भाइयों के वंश के हैं दूसरे वे इसी देश में पैदा हुये, यहां के ही जल, वायु तथा अन्न से उनके शरीर बने, तीसरे अब हिन्दुओं ने भी उनसे घृणा करना छोड़ दिया और जहां किसी समय उनको छूकर नहाते थे, वहां अब उन्हें अपनी बिरादरी में मिला रहे हैं। अतएव उनको अपने २२ करोड़ हिन्दू भाइयों से मिलने में किञ्चिन्मात्र भी कठिनता न होगी, हिन्दू सहर्ष उन्हें अब अपने में मिलाने को तय्यार हैं, यदि सच्चे स्वराज्य-भक्त मुसलमान व ईसाई इस गुरुमन्त्र को समझ कर इस सुअवसर से लाभ उठाना चाहें, पर मैं जानता हूं कि स्वार्थ और कट्टरपना ऐसा करने न देगा। इसलिये ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब की बताई तरकीबों पर हिन्दुओं को उठते, बैठते, चलते, फिरते, खाते, पहिनते हरसमय ध्यान रखना चाहिये, नहीं मालूम कौन आदमी उनका जासूस हमारे पीछे होवे, नहीं मालूम कौन षड्यंत्र वे रच रहे हों,

उनके महक्मे जासूसी क़ायम होजाने पर क्या हमारा मुसलमान सिपाही, कोचवान, दर्ज़ी, दूध वाला, फल व तरकारी देजाने वाला, घर में चूड़ी पहनाने वाला, फेरी वाला या भीख मांगने वाला हमारे यहां का नमक खाकर हमारे साथ विश्वासघात करेगा या जासूसी का काम करेगा और हमारे यहां के भेद अपने महक्मे जासूसी में देगा? जिन्हें इस बात पर विश्वास न होता हो उनको अजमेर के २३ जुलाई सन् २३ के हत्याकाण्ड की बातें हिन्दू घायलों से पूछना चाहिये। दश २ पन्द्रह २ वर्ष के पुराने काम करने वाले पल्लेदारों, रंगरेजों, घोसियों और चूड़ीवालों ने अपने परिचित, नहीं २, मित्र और मालिक हिन्दुओं की जो कुछ दुर्गति की उसके लिखने के लिये लेखनी में शक्ति नहीं है)

(ख़्वाजा साहब की तरकीबों पर ध्यान रखते हुए यदि निम्नलिखित बातों पर अमल किया जावे तो अधिक लाभ होगा, क्योंकि मैं अपने हिन्दू भाइयों को उनके हथकन्डों का तुर्की बतुर्की जवाब देने की सलाह नहीं देता और न अपने मित्र के आदेशानुसार उनकी प्रत्येक चाल का प्रतिकार ही लिखना चाहता हूं। उनके लिखने से हिन्दुओं के दिलों में मुसलमानों के प्रति घृणा उत्पन्न होने की सम्भावना है, जो अपना उद्देश नहीं है। नहीं तो कुल पुस्तक का उत्तर केवल दो शब्दों में यह हो सकता है कि ऐसे लोगों से अपना किसी प्रकार का भी संबन्ध न रक्खा जावे, और जिस प्रकार से मुसलमान लोग हिन्दुओं के पेशों की दूकान खोल २ कर उनका बहिष्कार कररहे हैं उसी प्रकार से हिन्दू लोग भी उनका एकदम बहिष्कार करदें, पर जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूं कि हिन्दू मुसलमानों का चोली दामन का सा साथ होगया है, अब इस प्रकार का

बहिष्कार एक तो कठिन भी है, दूसरे इससे एक दूसरे के प्रति घृणा अधिक उत्पन्न होगी इसलिये हिन्दुओं को अपनी रक्षा ही करना बहुत है)

(हिन्दू संगठन की आवश्यकता को समस्त हिन्दू जनता ने महसूस किया है और अक्सर जगह उद्योग भी हो रहा है, इस समय आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दू सभायें नगर २ और ग्राम २ में स्थापित हो जावें और गांवों की सभायें तहसील, तहसीलों की ज़िला, ज़िलों की प्रांत और प्रांत की भारतवर्षीय हिन्दू महासभा के आधीन हों और जिस प्रकार से अंग्रेज़ी सर्कार का प्रबन्ध सुसंगठित रूप से चल रहा है उसी प्रकार से हिन्दू सभाओं को चलाया जावे और समस्त हिन्दू-सभायें निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान रक्खें—

१—कोई हिन्दू अनाथ बिना सहायता के आवारा तो नहीं फिर रहा है, यदि हो तो उसे समीप के किसी अनाथालय में भेज देना चाहिये।

२—कोई बेवा स्त्री बिना किसी सहारे के तो नहीं है, यदि हो तो उसकी इच्छानुसार उसका उचित प्रबन्ध करना चाहिये।

३—कोई स्त्री या पुरुष अपने घर से लड़ाई करके भागने वाला तो नहीं है, यदि हो तो सभा के कार्य्यकर्त्ता उसे समझा बुझाकर फ़ैसला करा दें।

४—किसी हिन्दू मर्द का सम्बन्ध किसी मुसलमान स्त्री से तो नहीं है, यदि हो तो छुटाने का प्रयत्न करना चाहिये और न छूटने पर हिन्दू शास्त्र के अनुसार वह संबन्ध दृढ़ करा देना चाहिये, यानी उस स्त्री को शुद्ध करके उस पुरुष से उसका विवाह करा देना चाहिये।

५—किसी हिन्दू स्त्री का संबन्ध किसी मुसलमान पुरुष से तो नहीं है, यदि हो तो उसके छुटाने का प्रयत्न करना चाहिये, और उस स्त्री का पुनर्विवाह करदेना चाहिये, यदि वह स्त्री उसी पुरुष के साथ राज़ी हो तो उसे शुद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिये।

६—कोई पुस्तक या विज्ञापन हिन्दुओं के विरुद्ध में तो नहीं निकाला गया, यदि निकाला गया हो तो जिस सभा या मनुष्य को प्राप्त हो वह महासभा को भेज दे और महासभा उसके खण्डन का प्रबन्ध करे।

७—कोई लड़का या लड़की मुसलमानों के मदरसों या स्कूलों में तो नहीं पढ़ते यदि पढ़ते हों तो उनको वहां से हटा कर हिन्दू पाठशालाओं में भर्ती कराना चाहिये, जिस गांव में पाठशाला न हों वहां खोलने का प्रबन्ध करना चाहिये।

८—किसी मुसलमान स्त्री अथवा मर्द को, चाहे वह किसी भी चीज़ के बेचने का कार्य्य करता हो, हिन्दू स्त्रियों में न जाने देना चाहिये।

६—किसी फ़क़ीर या मुल्ला के पास किसी स्त्री या बच्चे को झाड़ा फूंकी वा औलाद मांगने के वास्ते कदापि नहीं जाने देना चाहिये, किसी मनुष्य को सिद्ध समझ कर घर में नहीं आने देना चाहिये, मुसलमान लोग हिन्दू पण्डितों व साधुओं के स्वाङ्ग भरकर लोगों को भ्रष्ट करते फिरते हैं, इसलिये बिना जाने किसी को घर में नहीं घुसने देना चाहिये। मुसलमान स्त्री पुरुषों को कैसा ही काम क्यों न हो स्त्रियों में कदापि नहीं जाने देना चाहिये।

१०—जो हिन्दू स्त्रिय बाहर जाती हैं उनको इकल्ली कभी नहीं जाने देना चाहिये, झुंड में जावें और बाहर एक मर्द उनके

साथ हो, जो हिन्दू स्त्रियें व लड़के मज़दूरी करने मुसलमान मिस्तरियों व छोटे कारखाने वालों के यहां जाते हैं उन्हें वहां नहीं जाने देना चाहिये, क्योंकि प्रायः उनके साथ व्यभिचार किया जाता है और वे ज़बरन मुसलमान बना लिये जाते हैं।

११-प्रत्येक मन्दिर में व्यायामशाला व अखाड़ा खोलना चाहिये वहां महावीरजी की तसवीर होना चाहिये और १ आदमी लाठी सिखाने वाला भी रहना चाहिये, ग्राम २ में सेवकमण्डल बनाना चाहिये और मन्दिरों में दवाइयों का भी प्रबन्ध करना चाहिये। प्रत्येक ग्राम में १५ से २० वर्ष के जितने युवक हों उन्हें कसरत करना, लाठी चलाना आदि सीखाने का प्रबन्ध करना चाहिये)

(उपरोक्त बातों के अतिरिक्त प्रत्येक हिन्दू सभा को अपने आधीन ग्रामों की निम्नप्रकार की सूची अपने पास रखनी चाहिये—

१—प्रत्येक ग्राम में किस २ जाति के कितने घर हैं।

२—कितने अनाथ व लावारिस बच्चे हैं।

३—कितनी बेवायें हैं और उसमें से कितनी बे-सहारे हैं।

४—कौन २ सा पेसा पेशा मुसलमान करते हैं जिसके कारण हिन्दुओं का उनसे संसर्ग रहता है।

५—कितने मंदिर हैं।

६—कितने मदरसे या पाठशालायें हैं।

७—कितने लड़के या लड़कियां पढ़ते हैं, इत्यादि)।

इति।

क्या ख़तरे के घन्टे को नष्ट करदेना चाहिये ?

श्री राजगोपालाचार्य तथा उन्हीं के विचार वाले कुछ सज्जनों का अब भी यही ख्याल है कि मुसलमान चाहे जितना अत्याचार हिन्दुओं पर करें, उन्हें कुछ शिकायत तक न करना चाहिये, उनका कहना है कि क्या हर्ज है यदि १ करोड़ हिन्दू मुसलमान बन जावें, हमारी तादाद फिर भी २१ करोड़ रहेगी, पर जिन्होंने इस विषय पर कुछ भी मनन किया है उनका यह निश्चय है कि उपरोक्त सज्जनों के विचारों से सहमत होजाने पर न केवल १ करोड़ किन्तु शीघ्र ही ७ करोड़ और फिर शेष हिन्दू जाति का नाश अनिवार्य है।

ख्वाजा हसन निज़ामी 'दाइये इस्लाम' नामी पुस्तक का मुसलमानों में छुपे २ प्रचार करके उन्हें शीघ्र १ करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की बहुतसी तरक़ीबें बता रहे हैं। उन तरक़ीबों पर अमल भी शुरू होगया है पर यदि उन तरक़ीबों से हिन्दुओं को सचेत किया जाता है तो ऐसी पुस्तक को प्रताप कानपुर नष्ट करदेने की सलाह देता है। खैर यह पुस्तक ऐसे विचार वालों के लिये नहीं है, यह पुस्तक केवल उन के लिये है जो हिन्दू जाति के एक २ बच्चे की रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझता है।

पुस्तक की उपयोगिता का परिचय इसी से हो सकता है कि केवल ३ दिन में उसका प्रथम संस्करण २००० का निकल गया, १ पुस्तक भी अपने यहां न रहगई और कई हज़ार के

आर्डर इस समय हाथ में हैं। कुछ का ख्याल चाहे जो हो पर मेरा विचार तो एक २ हिन्दू बच्चे तक को ख्वाजा साहेब के हथकण्डों से सचेत कर देने का है। इसी अभिप्राय से दूसरा संस्करण ५००० का निकाल कर ≥) के बदले =) में देना निश्चय किया है। गुजराती में १ सज्जन ने ५००० छपाकर बांटने के लिये आज्ञा मांगी है। क्या ही अच्छा हो कि उर्दू, बंगला व मद्रासी और विशेषकर ब्राह्मी भाषा में भी अनुवाद होजावें, क्योंकि ब्राह्मी लोगों को मुसलमान बनाने और उनकी देवियों को अपहरण करने के लिये विशेष रूप से बल दिया गया है।

इस संस्करण में बहुत कुछ संशोधन किया गया है और जो २ त्रुटियां प्रथम संस्करण में ज्ञात हुईं उन के दूर करने का भी प्रयत्न किया गया है। आशा है कि पहिले की नाईं इस संस्करण को भी जनता अपना कर हमारे उत्साह को बढ़ावेगी।

इतना अल्प मूल्य केवल इसलिये करदिया गया है कि जिसमें दानी महाशय सौ २ पांच २ सौ लेकर गरीब हिन्दू जनता में वितरण कर सकें।

निवेदक—
प्रबन्धकर्त्ता
आर्य्य-साहित्य-मण्डल,
अजमेर.

आर्य-साहित्य-मण्डल, अजमेर.

मूल धन	२,००,०००) रु०
प्रति हिस्सा	१०) रु०

उपरोक्त नाम की एक कम्पनी २ लाख रुपये की पूंजी से दस दस रुपये प्रति हिस्सा करके बनाना निश्चय किया गया है। इस संबन्ध मे समाचारपत्रों में सूचना निकलते ही लोगों ने हिस्से लेने और कम्पनी को शीघ्र रजिस्ट्री कराने के लिये धड़ाधड़ पत्र भेजना आरंभ कर दिया है। इस कम्पनी द्वारा न केवल, खण्डन, मण्डन सम्बन्धी किन्तु और भी हर प्रकार की आर्य्य साहित्य की पुस्तकें निकला करेंगी, जिससे जनता को बहुत बड़ा लाभ होगा। यह मंडल बड़े २ शहरों में बुकडिपो भी खोलेगा जिनमे नक़द व उधार किस्तों पर पुस्तकें बेची जावेंगी, किन्तु यह कार्य्य कम्पनी के रजिस्ट्री होजाने पर किया जावेगा। अब आप का कर्त्तव्य है कि शीघ्र इसके हिस्से खरीदें।

इसके सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिये निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करें।

मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर,

आर्य्य-साहित्य-मण्डल, अजमेर.